यीशु कौन है ?

तथा

अन्य प्रवचन

लेखक
सनी डेविड

सत्य सुसमाचार रेडियो संदेशमाला

प्रकाशक :
मसीह की कलीसिया
बॉक्स 3815
नई दिल्ली–110049

WHO IS JESUS ?
AND
Other Sermons

By Sunny David

विषय सूची

	पृष्ठ
1. यीशु कौन है ?	1
2. आपको यीशु की आवश्यकता क्यों है ?	7
3. यीशु को आपकी आवश्यकता क्यों है ?	12
4. जब यीशु का जन्म हुआ था	18
5. जिस दिन यीशु मरा था	24
6. यीशु पृथ्वी पर क्यों आया था ?	30
7. यीशु किस लिये आया था ?	36
8. यीशु जगत के पापों का प्रायश्चित करने को आया था	42
9. यीशु मनुष्य की एकमात्र आशा	47
10. जब यीशु वापस आएगा	52
11. यीशु की कलीसिया	57
12. "जो मुझ से हे प्रभु कहता है"	62
13. क्या हम सब स्वर्ग में जाएंगे ?	68

सत्य सुसमाचार

मसीह यीशु के सुसमाचार का रेडियो कार्यक्रम

19, 25 और 41 मीटर बैंड पर रेडियो श्रीलंका से सुनिये प्रत्येक मंगलवार और बृहस्पतिवार और शुक्रवार को रात में नौ बजे तथा प्रत्येक रविवार को दिन में 12:45 पर

प्रस्तुतकर्त्ता
मसीह की कलीसिया

वक्ता
सनी डेविड

यीशु कौन है ?

इस प्रोग्राम में हम आपको प्रभु यीशु मसीह के बारे में बताते है । यीशु मसीह, जिसका जन्म आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हमारे एशिया में हुआ था, परमेश्वर का अवतार था । उसने अपने बारे में कहा था कि जिसने मुझे देखा है उसने परमेश्वर को देखा है । उसने कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं और बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता । और जब उसके एक चेले ने उससे आग्रह करके कहा था, कि हे प्रभु हमे परमेश्वर के दर्शन करवा दे । तो यीशु ने उस चेले कहा था, कि मैं तो इतने दिनों से तुम्हारे बीच में हूं क्या तू मुझे नहीं जानता ? क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं ही परमेश्वर हूं; पिता मुझ में है और मैं पिता में हूं । जो कुछ मैं बोलता हूं या करता हूं, वह मैं अपनी ओर से नहीं बोलता और नहीं करता परन्तु पिता परमेश्वर मुझ में रहकर अपने काम करता है । यीशु का जीवन, उसकी शिक्षाएं और उसके काम सब बड़े ही अद्‌भुत थे । ऐसा महान और आदर्शपूर्ण था उसका जीवन कि आज भी संसार भर में करोड़ो लोग उसका सा जीवन व्यतीत करने की इच्छा अपने मनों में रखते हैं । उसकी शिक्षाओं को सुनकर लोग दंग रह जाते थे । और उसके कामों को देखकर लोग आश्चर्य–चकित रह जाते थे ।

बाइबल में एक किताब है जिसका नाम है यूहन्ना के सुसमाचार की पुस्तक । इस पुस्तक में यूहन्ना नाम के यीशु के एक चेले ने यीशु के जीवन की कथा को लिखा है । एक जगह इस किताब में वह लिखकर हमें बताता है, कि एक बार यीशु अपने चेलों के साथ जा रहा था और लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ उनके साथ चल रही थी । लोग हर प्रकार के बीमारों को

उठा–उठाकर यीशू के पास ला रहे थे और यीशु उन्हें अपनी सामर्थ से तत्काल चंगाई दे रहा था। यीशू के आश्चर्यकर्मों को देख–देखकर लोग बड़े ही आश्चर्य–चकित हो रहे थे, और लोगों की गिनती बढ़ती ही जा रही थी। यहां तक कि उनकी संख्या पांच हजार से भी अधिक हो गई थी। तभी यीशु ने अपने चेलों से कहा कि अब हम इन सब लोगों को भोजन खिलाएंगे। पर चेलों ने यीशु से कहा यह कैसे हो सकता है– यह बात तो असम्भव है। क्योंकि इतने लोगों के लिये भोजन हम कहां से लाएंगे ? यीशु ने चेलों से कहा, कि यहां देखो यदि किसी के पास कुछ खाने को है। कुछ ही देर में एक चेला ने लड़के को यीशु के पास लेकर आया और उससे कहा कि इस लड़के के पास इसके खाने के लिये कुछ भोजन हैं। यीशु ने उस लड़के से वह भोजन मांगा और उसने खुशी से वह भोजन यीशु को दे दिया। तब यीशु ने चेलों से कहा, कि लोगों को बैठा दो। और उसने उस थोड़े से भोजन के लिये परमेश्वर को धन्यवाद दिया। और फिर, अपने चेलों से कहा, कि अब इसे लोगों में बांटना आरम्भ करो। लोगों के आश्चर्य की कोई सीमा नहीं थी, क्योंकि वे सब देख रहे थे, कि सबको भोजन बांटा जा रहा है। यहां तक, कि जब सब लोगों ने पेट भरकर खा लिया तो बचे हुए रोटियों के टुकड़ो के बारह टोकरे वहां से उठाए गए। स्वाभाविक ही है, कि यह सब देखकर वे लोग बड़े ही प्रभावित और आश्चर्य–चकित हुए होंगे। और यूहन्ना हमें बताता है, कि वे लोग यीशु को अपना राजा बनाकर महिमानिवत करना चाहते थे। लेकिन यीशु उनके बीच में से निकलकर चला गया, क्योंकि वह अपनी महिमा नहीं करवाना चाहता था। और कुछ ही समय बाद वे सब लोग भी अपने–अपने घर चले गए।

परन्तु जब दूसरा दिन हुआ तो वे सब लोग फिर से यीशु को ढूंढने के लिये निकल पड़े। और घन्टों तक उसे ढूंढते रहे। और जब वह उन्हें मिल गया तो उन्होंने यीशु से कहा, कि हम

तो तुझे वहीं ढूंढ़ रहे थे जहां तू हमें कल मिला था, पर तू यहां कैसे आ गया ? यीशु ने उन सब की ओर देखकर उन से कहा, कि मैं तुमसे सच–सच कहता हूं कि तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ रहे हो कि तुमने मेरे अश्चर्यकर्मो को देखकर यह विश्वास किया है कि मैं परमेश्वर का पुत्र हूं, पर तुम मुझे इसलिये ढूंढ़ रहे हो क्योंकि मैने तुम्हें कल रोटियां खिलाई थीं। इसलिये, नाशमान भोजन के लिये परिक्षम न करो, पर उस भोजन के लिए करो जो तुम्हें अनन्त जीवन दे सकता है। (यूहन्ना 6: 1-27)।

सो इस घटना से आज हमें क्या शिक्षा मिलती है? वे लोग यीशु को क्यों ढूंढ़ रहे थे ? वे लोग यीशु को किसी आत्मिक कारण से नहीं परन्तु शारीरिक कारण से ढूंढ़ रहे थे। पर यीशु इस संसार मे किसी शारीरिक कारण को लेकर नहीं आया था। वह इसलिये स्वर्ग को छोड़कर नहीं आया था क्योंकि पृथ्वी पर बहुत से लोग बीमार और भूखे थे। पर वह तो जगत के पापों का प्रायश्चित करने को आया था। वह लोगों को शारीरिक जीवन देने के लिये नहीं आया था, पर वह उन्हें आत्मिक जीवन देने के लिये आया था। और जिन आश्चर्यकर्मो को उसने लोगों के बीच में किया था, उन्हें उसने सिर्फ इसी उद्देश्य से किया था ताकि लोग उसमें यह विश्वास लाएं कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है। और क्रूस पर होने वाली उसकी मौत परमेश्वर के पुत्र की मौत है। जो जगत के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मरा था। पर लोगों ने उस समय यीशु को गलत समझा था, उन्होंने उसके कामों के उद्देश्य को गलत समझा था। लोग उसके पास तो आना चाहते थे, और उसके पीछे तो चलना चाहते थे, परन्तु उसके पास आने के उद्देश्य गलत थे।

और ठीक ऐसा ही आज भी अनेक उन लोगों के साथ है जो यीशु की ओर आकर्षित होकर आज उसके पास आना चाहते हैं। लोग सोचते हैं कि "क्रिसचियन" या "ईसाई" बन जाने से उनकी कुछ शारीरिक और सामाजिक समस्याएं हल हो जाएंगी।

कुछ लोग अपने समाज या जाति के अत्याचारों से मुक्ति पाने के लिये यीशु के पास आना चाहते हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि "क्रिसचियन" या "ईसाई" बन जाने से उनके बच्चों को किसी "क्रिसचियन स्कूल" में दाखिला मिल जाएगा और उनकी फीस माफ हो जाएगी। यानि आज भी अनेकों लोग प्रभु यीशु मसीह की ओर अपने कुछ शारीरिक और समाजिक कारणों से आकर्षित हो रहे हैं। और इसलिये आज उन्हें भी यीशु के इन शब्दों को सुनने की और उन पर विचार करने की जरुरत है, कि, "नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, पर उस भोजन को प्राप्त करने का यत्न करो जो अनन्त जीवन तक ठहराता है।"

आप चाहे कोई भी क्यों न हों, आपको प्रभु यीशु मसीह की आवश्यकता है। क्योंकि आप के पास एक बहूमूल्य आत्मा है। आप एक आत्मिक प्राणी हैं। और क्योंकि आप आत्मिक हैं इसलिये आप अनन्त हैं। यानि आप का कभी अन्त नहीं होगा। आप हमेशा वर्तमान रहेंगे। परन्तु आप के जीवन में पाप है। आप की आत्मा पर पाप का आरोप है। इसलिये एक दिन जब आप इस संसार को छोड़कर जाएंगे तो आप एक ऐसे स्थान में प्रवेश करेंगे जहां सारे पापी प्रवेश करते हैं। प्रभु यीशु ने कहा था, कि वह स्थान ऐसा होगा जहां हमेशा का रोना होगा। और उसने कहा था, कि उस अंधकार पूर्ण और भयंकर स्थान में जाने से बचने के लिये यदि मनुष्य को बड़े से बड़ा दाम भी चुकाना पड़ जाए तो वह अधिक न होगा। पर मनुष्य पाप के कारण नरक में जाने से बचने के लिये स्वयं क्या कर सकता है ? इन्सान नरक में जाने से बचने के लिये खुद क्या दे सकता है ? यदि ऐसा सम्भव होता तो परमेश्वर अवश्य ही हमें अपनी बाइबल के द्वारा बताता कि हम क्या करके अपने पापों को दाम चुका सकते हैं और किस प्रकार उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योग्य अपने आप को स्वयं बना सकते हैं। पर यह असम्भव है। क्योंकि मनुष्य के शरीर के एक–एक अंग में पाप बसा हुआ है। वह अपने पापों का

प्रायशिचत करने के लिये न तो स्वयं कुछ दे सकता हैं और न कुछ कर सकता है। इसलिये प्रत्येक मनुष्य को यीशु की आवश्यकता है। क्योंकि यीशु का जीवन पवित्र था। उसने कभी कोई पाप नहीं किया था। और उसी पवित्र और पाप–मुक्त जीवन को यीशु ने सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान किया था। यीशु आप के पापों का प्रायश्चित हैं। वह एक ऐसा प्रायश्चित है जिसे परमेश्वर ने ठहराया है। इसलिये आप को उसकी आवश्यकता है। यीशु आपकी आवश्यकता है, यीशु मेरी आवश्यकता है, और यीशु सारे जगत की आवश्यकता है। क्यांकि यीशु परमेश्वर की ओर से नियुक्त किया हुआ सारे जगत के पापों का प्रायश्चित है। उसके बिना पापों का प्रायश्चित हो ही नहीं सकता। जब उसका जन्म हुआ था तो एक स्वर्गदूत ने उसकी माता के पास आकर कहा था कि "तू उसका नाम यीशु रखना।" यीशु नाम का मतलब ही "उद्धार कर्त्ता " है। यीशु उद्धार करने वाला है। यीशु मुक्तिदाता है। वह हमारे पापों का छुटकारा है। और इसीलिये हम सब को उस की जरुरत है। यही कारण है, कि इस बात को आप के सामने रखने क लिये हम बार–बार रेडियों तथा साहित्य के माध्यम से आपके पास आकर आप से निवेदन करके कहते हैं कि आप यीशु की आवश्यकता को अपने जीवन में अनुभव करें। क्योंकि उसके बिना पापों से उद्धार कहीं नहीं है। और पापों से छुटकारा पाना मनुष्य की एक सबसे बड़ी आवश्यकता है।

क्या आप यीशु में विश्वास करते हैं ? क्या आप यह मानते हैं, कि यीशु आपके पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मरा था ? क्या आप यह मानते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और वह आपके सब पापों से आप का उद्धार कर सकता है ? पवित्र बाइबल में लिखा है, कि हर एक इन्सान जो यह विश्वास करता है, उसे चाहिए कि वह अपने पापों से अपना मन फिराए और अपने पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर बपतिस्मा ले

क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा था, कि मेरे सुसमाचार को सुनकर जो विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा। (मरकुस १६:१५–१६; प्रेरितों २ : २८) । क्या आज आप अपने जीवन को प्रभु यीशु को देने का तैयार हैं ?

मेरी आशा है कि यीशु की आवश्यकता को आप आपने जीवन में अवश्य ही अनुभव करेंगे, और निश्चय ही उसके पास आएंगे । क्योंकि उसके अलावा क्या आप के पास कोई और आशा है ?

आपको यीशु की आवश्यकता क्यों है ?

इस कार्यक्रम में आप का ध्यान प्रभु यीशु मसीह की ओर दिलाता हूँ। क्योंकि मैं जानता हूँ कि हम में से हर एक को उसकी आवश्यकता है। यदि ऐसा न होता, तो वह परमेश्वर से अलग होकर और स्वर्ग को छोड़कर इस पृथ्वी पर क्यों आता ? परमेश्वर ने उसे आप के और मेरे लिये और सारे जगत के लिये इस जमीन पर भेजा था। परमेश्वर की पुस्तक पवित्र बाइबल में लिखा है, कि, "प्रेम इस में नहीं, कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है कि उस ने हम से प्रेम किया और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा।" (२ यूहन्ना ४ : १०)। परमेश्वर जानता है कि हम सब पापी हैं, और इस कारण से हम उसके योग्य नहीं हैं। क्योंकि वह धर्मी और पवित्र है। और वह यह भी जानता है, कि प्रत्येक मनुष्य यह चाहता हे कि अपनी मृत्यु के बाद वह उसके स्वर्ग में प्रवेश करे। किन्तु पाप के कारण मनुष्य स्वर्ग में नहीं जा सकता। वह वहां जाने की कामना कर सकता है, इच्छा कर सकता है। पर जा नहीं सकता। क्योंकि प्रत्येक मनुष्य के जीवन में पाप है। स्वर्ग पापियों के लिये नहीं है, परन्तु धर्मियों के लिये है। सो यीशु को परमेश्वर ने जगत में इसीलिये भेजा था, कि वह पृथ्वी पर पापियों को पवित्र बना दे, अधर्मियों को धर्मी बना दे, और उन्हें पाप से छुड़ाकर परमेश्वर के योग्य बना दे। हमारे पापों का प्रायश्चित करने के लिये परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा था। क्योंकि वह जानता है, कि हम स्वयं अपने पापों का प्रायश्चित नहीं कर सकते। कोई ऐसी वस्तु नहीं है, जो हम उसे दे सकते हैं। कोई ऐसा काम नहीं है, जिसे करके हम स्वयं अपने पापों का प्रायश्चित कर

सकते हैं । इसलिये, बाइबल में हम पढ़ते हैं कि जब हम निर्बल ही थे तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा, और जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा । (रोमियों 5 : 6-8) ।

इसलिये पृथ्वी पर कोई ऐसा इन्सान नहीं है जिसे यीशु मसीह की अवश्यकता नहीं है । हम सब को उसकी आवश्यकता है, क्योंकि हम में से हर एक ने पाप किया है । और हम में से हर एक एक–न–एक दिन अवश्य ही मरेगा और इस संसार से हमेशा के लिये जाएगा । पर अगर हम यीशु के बिना इस संसार से जाएंगे, तो हम अपने पापों के प्रायश्चित के बिना जगत से जाएंगे । और अपने पापों के दन्ड के फलस्वरूप स्वर्ग के विपरीत नरंक में प्रवेश करेंगे । किन्तु, परमेश्वर चाहता है, कि हम उसके स्वर्ग में प्रवेश करें । और इसीलिये उसने अपने पुत्र यीशु को जगत में भेजा था ।

यीशु ने कहा था "हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे लोगो, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूँगा । मेरा जूआ अपने ऊपर उठ लो, और मुझ से सीखो, क्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूँ और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे । क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है ।" (मत्ती 11 : 28-30) ।

पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य पापों के बोझ से दबा हुआ है । शायद हम इस बात की कल्पना तक भी नहीं कर सकते, कि अपने अब तक के जीवन में हमने कितने पाप किए हैं । और न जाने कितने और पाप हम अपने बाकी के जीवन में करेंगे । पर यीशु कहता है, कि तुम मेरे पास आओ और अपने बोझ को मुझे दे दो, कितना प्यार, और कितनी सहानुभूति यीशु के इन शब्दों में हमे दिखाई देती है । क्या ऐसे शब्द आज तक किसी मनुष्य ने कहे हैं ? नहीं , क्योंकि ऐसे शब्दों को कोई और कह ही नहीं सकता था । हमारी इस पृथ्वी पर बड़े–बड़े महापुरूष हुए हैं । जिन्होंने अच्छी–अच्छी शिक्षाएं दी हैं, मेल–मिलाप से रहने और

भले कामों को करने की शिक्षाएं दी हैं । ओर हमें उनका आदर और सम्मान करना चाहिए । परन्तु उन में से कोई भी यह बात कहने के योग्य नहीं था, कि, हे सब बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओं में तुम्हें विश्राम दूगा । यह शब्द केवल परमेश्वर का पुत्र यीशु मसीह ही कह सकता था । क्योंकि वह जानता था, कि वह इसी उद्देश्य से इस जगत में आया था । क्योंकि वह जानता था कि वह जगत के सारे पापों को उठाने के लिये सक्षम था । और, क्योंकि वह जानता था, कि जब उसे क्रूस पर चढ़ाया जाएगा तो वह अपनी मृत्यु के द्वारा, परमेश्वर की इच्छा से, सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करेगा । इसीलिये, बाइबल में हम पढ़ते हैं, कि जब रोम के सिपाही यीशु को क्रूस के ऊपर कीलों से ठोंक रहे थे, और जब लोग उसके चारों तरफ खड़े हुए उसका उपहास कर रहे थे, और यह कह रहे थे कि इसने इतने बड़े–बड़े अचम्भे के काम किए थे और इसने औरों को बचाया था, अब यदि यह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र है तो अब अपने आप को बचा ले । उस समय, क्रूस पर चढ़ा हुआ यीशु उन लोगों के लिये परमेश्वर से यह कहकर प्रार्थना कर रहा था, कि पिता तू इन्हें क्षमा कर क्योंकि ये जानते नहीं हैं कि ये क्या कर रहे हैं । (लूका २३ : ३४) । वे लोग सोच रहे थे, कि वे अपने एक शत्रु को खात्मा कर रहे थे । उनमें से कितने ऐसा सोच रहे थे, कि वे एक पाखन्डी का अंत कर रहे थे । परन्तु वास्तव में वे नहीं जानते थे कि वे क्या कर रहे थे । लेकिन यीशु जानता था, ओर परमेश्वर जानता था, कि वे क्या कर रहे थे । सच्चाई यह थी, कि वे सब के सब मिलकर परमेश्वर की एक महान योजना को सफल कर रहे थे, परमेश्वर ने अपनी इच्छा को पूर्ण करने के लिये उनके मनों को यीशु के प्रति कठोर बना दिया था । यहां तक कि जिस व्यक्ति को कूस पर चढाने की आज्ञा देने का अधिकार था, वह खुद नहीं यह समझ पा रहा था, कि सब लोग क्यों चिल्ला –चिल्लाकर यह मांग कर रहे थे, कि, "इसे कूस पर चढ़ा उस ने उन

लोगों से कहा था, कि मैं तो इस यीशु में ऐसा कोई दोष नहीं पाता कि यह क्रूस पर चढ़ाया जाए । तौभी, लोगों की आवाज इतनी अधिक प्रबल हुई कि पीलातुस को यह आज्ञा देनी पड़ी, कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाया जाए ।

यीशु निर्दोष था । उस ने कोई पाप नहीं किया था । किन्तु, फिर भी परमेश्वर न यह होने दिया, कि वह क्रूस पर चढ़ाया जाए और मौत की सज़ा पाए । क्योंकि आप को और मुझे पाप के दन्ड और नरक से बचाने का केवल यही एक उपाय था । आपको और मुझे स्वर्ग के योग्य बनने के लिये अपने पापों के प्रायश्चित की आवश्यकता थी । और यीशु ने क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा हमारे पापों का प्रायश्चित कर दिया है । इसीलिये वह कहता है, कि हे बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओ । पर हम किस प्रकार यीशु के पास आते हैं ? यीशु के पास हम उसमे विश्वास लाकर और उसकी आज्ञाओं को मानकर आतें हैं । सबसे पहले, हमे यीशु में यह विश्वास लाना चाहिए कि वह परमेश्वर का पुत्र है और वह हमारें पापों को प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मारा गया था । फिर हमें यीशु की आज्ञा मानकर अपने पापों से मन फिराना चाहिए, अर्थात इस बात का मन मे निश्चय करना चाहिए कि अब हम पाप का जीवन व्यतीत नहीं करेंगें । क्योंकि जबकि यीशु ने पाप से हमारा उद्धार करने के लिए ऐसा महान् दुख उठाया, तो फिर हम पाप में कैसे रह सकते हैं ? और प्रभु यीशु ने कहा था, कि जब हम उसमे अपने–अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए । बपतिस्मा लेने का अर्थ है, जल के भीतर दफन होकर उसमे से बाहर आना । यह इस बात का प्रतीक है, कि मैं पाप के लिये मर गया, और एक मरे हुए इन्सान की तरह दफ़नाया गया, और एक नए जीवन की चाल चलने के लिये फिर से जी उठा । इस प्रकार हम प्रभु यीशु मसीह के पास आ जाते हैं और उसके अनुयायी बन जाते हैं । फिर हम उसका सा जीवन व्यतीत करने का प्रयत्न करेंगें, उन बातों पर

चलने की कोशिश करेगें जिन्हे हम उस के जीवन से सीखतें हैं । फिर हम निराश नहीं रहेंगें । परन्तु हमारे पास एक आशा होगी, एक महान् आशा, और वह यह कि जब हम इस जगत को छोड़कर जाएंगें, तो हम परमेश्वर के पास स्वर्ग मे जाएंगे । क्योंकि यीशु ने हमारे पापों का प्रायश्चित कर दिया है ।

मेरी आशा है, मित्रों, कि आप अपने जीवन में यीशु की आवश्यकता को अनुभुव करेंगें, और उस पर विश्वास लाकर और उसकी आज्ञाओ को मानकर उसे अपना मुक्तिदाता बनाएंगें । अब मैं अगले प्रोग्राम तक के लिये आप से आज्ञा चाहूंगा । मुझे खुशी होगी अगर आप पत्र लिखकर मुझे यह बताएंगें कि आप "सत्य सुसमाचार" सुनते हैं और इस कार्यकम से आप को लाभ मिल रहा है ।

यीशु को आपकी आवश्कता क्यों है ?

मित्रो, इस समय हम अपने घ्यानों को उस परमेश्वर की ओर लगाते हैं जो हम सब का सृष्टिकर्ता है और जो हमारा आत्मिक और स्वर्गीय पिता है। उसने हमें बनाया है और हमें यह जीवन दिया है, क्योंकि उसमे जीवन है। वह एक जिन्दा और एक सच्चा परमेश्वर है। जीवन केवल जीवन से ही निकलता है। पत्थर, मिटटी और लोहे में से जीवन नहीं निकलता। हमारा परमेश्वर कोई निर्जीव वस्तु नहीं है। वह वास्तविक है, वह जीवित है। वह सुनता है, देखता है, और अनुभव करता है। वह जानता है कि हम क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते हैं। वह हमारी आवश्कताओं को जानता है। वह हमारी कमज़ोरियों को जानता है। और जैसे भी हम हैं वह हम सब से प्रेम करता है। और अपने उस महान प्रेम को व्यक्त करने के लिये उसने प्रभु यीशु के बारे में बाइबल में लिखा है, कि वह परमेश्वर का वचन था, जो आदि से परमेश्वर के साथ था, और स्वयं परमेश्वर था। उसी को परमेश्वर ने एक मनुष्य के रुप मे जगत में भेजा था। वह मनुष्य की इच्छा से नहीं परन्तु परमेश्वर की इच्छा से पैदा हुआ था। और इसीलिये वह परमेश्वर का पुत्र और जगत का उद्धारकर्ता कहलाया था।

यीशु का जीवन पवित्र था। उसकी शिक्षाएं जीवन दायक और अदभुत थीं, और उसके काम सामर्थ से परिपूर्ण थे। उसने कहा था, कि मैं पृथ्वीं पर उन लोगों के लिये आया हूं जो पाप मे खोए हुए हैं, मैं उन्हे ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया हूं। यीशु स्वयं तो पवित्र था, परन्तु वह पापियों के साथ उठता–बैठता था। और इस कारण से बहुत से लोग उस पर दोष लगाकर

कहते थे, कि तू परमेश्वर का पुत्र हो ही नहीं सकता, क्योंकि तू तो पापियों के संग रहता हैं। पर यीशु उन से कहता था कि मैं जगत में पापियों के लिये ही आया हूं, मै उन के लिये नहीं आया हूं जो अपने आपको धर्मी समझते हैं। क्योंकि उद्धार की आवश्यकता पापियों को है। यीशु ने कहा था, कि जिस प्रकार एक डॉक्टर की आवश्यकता बीमारों को होती है उसी प्रकार आत्मिक रुप से बीमार लोगों को मेरी आवश्यकता है। यीशु पापियों की अपवित्रता के सम्पर्क मे आकर स्वर्ग अपवित्र नहीं होता था, परन्तु अपनी अपवित्र से वह पापियों को पवित्र बना देता था। वह स्वयं अपने लिये इस जगत में नहीं आया था। परंतु वह जगत के सारे लोगों के लिये इस पृथ्वी पर आया था। उसने कहा था, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु हमेशा का जीवन पाए। यूहन्ना 3: 16)।

यीशु इस जगत में सारे लोगों के लिये आया था। वह इस पृथ्वी पर आप के लिये आया था। क्योंकि इस से भी पहले कि आप का जन्म होता, वह इस बात से परिचित था कि आप का जन्म इस पृथ्वी पर होगा और आप को उसकी आवश्यकता होगी। उसे आप के महत्व का ज्ञान है। वह जानता है कि आप कितने मूल्यवान हैं। आप शायद स्वयं अपना मूल्य नहीं जानते। आप अपना मूल्यांकन शायद अपनी गरीबी से करके कहें, कि मैं तो बहुत गरीब और निर्धन हूं। मेरा कोई महत्व नही है, क्योंकि मैं तो बहुत बीमार और एक अपाहिज हूँ। या आप कहें,कि मैं तो एक बड़ी ही छोटी जाति से हूं, या, मैं तो एक बहुत बड़ा पापी हूं। किन्तु परमेश्वर आप को ऐसे नहीं देखता, जैसे आप स्वयं अपने आप को देखते हैं, और वह आप को वैसे भी नहीं देखता जैसे कि अन्य लोग आपको देखते हैं। पर वह आप को एक ऐसे मनुष्य के रुप मे देखता है जिसे उसने अपने स्वरुप पर और

अपनी समानता पर बनाया है । वह जानता है कि आप उसी की तरह आत्मिक हैं और इसलिये आप स्वयं उसी की तरह हमेशा विघमान रहेंगें । और वह यह भी जानता है कि आपको एक मुक्तिदाता की आवश्यकता है । और इसलिये उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को एक इन्सान के रुप में मनुष्यों के बीच मे भेजा था । " जिस ने" बाइबल में लिखा है " परमेंश्वर के स्वरुप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा । बरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप घारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया । और मनुष्य के रुप मे प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, बल्कि कूस की मृत्यु भी सह ली ।" (फिलिप्पियों २ :६–८) । यीशु ने क्रूस की मृत्यु उठा ली क्योंकि यह आज्ञा उसे परमेश्वर से मिली थी । परमेश्वर उसे हमारे पापों के लिये बलिदान करके उसे हमारे पापों का प्रायश्चित ठहराना चाहता था । यीशु ने हमारे पापों का दन्ड अपने ऊपर ले लिया था, ताकि हम उस से मुक्त हो जाएं । क्योंकि वह हमारी आत्मा के महत्व को जानता है ।

इसीलिए आपको यीशु की आवश्यकता है और यीशु को आपकी आवश्यकता है । आपको यीशु की आवश्यकता इसलिये है क्योंकि बिना उसके आप पाप से मुक्त होकर स्वर्ग में नहीं जा सकते । और यीशु को आपकी आवश्यकता इसलिए है क्योंकि वह जानता है कि आपको परमेश्वर ने स्वर्ग में रहने के लिये बनाया है, पर पाप आपको नरक में ले जा रहा है । यीशु स्वर्ग मे अकेला नहीं रहना चाहता, वह आप के साथ रहना चाहता है । वह चाहता है कि हम सब वहां उसके पास जाएं और वहां सदा उसके साथ रहें । अपने अनुयायियों से उसने कहा था कि तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो । मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं और मैं तुम्हारें लिये जगह तैयार करने जाता हूं ताकि फिर

आकर तुम्हें अपने साथ ले जाऊं, ताकि जहां मैं रहूं वहां तुम भी मेरे साथ रहो। (यूहन्ना १४:१–३) । स्वर्ग एक ऐसा स्थान है जहां परिवार नियोजन की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि वहां किसी भी वस्तु की कमी नही होगी। और यीशु ने यह वादा किया है, कि फिर आकर तुम्हें अपने साथ ले जाऊंगा,ताकि जहां मैं रहूं वहां तुम भी मेरे साथ रहो। पहली बार यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित करके हमें स्वर्ग जाने के योग्य बनाने के लिये आया था। और दूसरी बार वह इसलिये आएगा ताकि वह हमें अपने साथ लेजाए। यीशु ने कहा था, कि उसके आने पर सारे मरे हुए लोग जी उठेंगें, ठीक उसी प्रकार जैसे यीशु परमेश्वर की सामर्थ से मरने के बाद जी उठा था और स्वर्ग पर उठा लिया गया था। ऐसे ही, जब यीशु आएगा तो हम सब भी जी उठेंगें। जिस प्रकार एक बीज को भूमि मे गाड़ा जाता है और कुछ समय बाद वह परमेश्वर की शक्ति से एक नई देह के साथ जी उठता है। उसी तरह से परमेश्वर हम सब को भी एक नई देह के साथ जिलाएगा। वह देह एक आत्मिक देह होगी, जो कभी नाश नहीं होगी। उसकी आवश्यकताएं आत्मिक होंगी। उसका अस्तित्व आत्मिक होगा। पर क्या हम उस समय, जब यीशु आएगा, उसके साथ स्वर्ग मे जाने को तैयार होंगे ?

क्या हम आज तैयार हैं ? क्या हमने यीशु को, जो हमारे पापों का प्रायश्चित है, अपने जीवनों में मान लिया है ? क्या हम अपने सारे मन से उसमे विश्वास ले आए हैं ? क्या हम ने उसकी आज्ञा को मानकर अपना मना पाप से मोड़ लिया है। और क्या हमने अपने सब पापों की क्षमा पाने के लिये उसकी आज्ञा मानकर जल में बपतिस्मा ले लिया है ? ऐसा करके हम यीशु के एक अनुयायी बन जाते हैं। और फिर हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि हम प्रतिदिन वैसा ही जीवन व्यतीत करें जैसा कि यीशु मसीह का था। बाइबल में लिखा है, कि तुम्हारा वैसा ही स्वभाव हो जैसा यीशु मसीह का था। (फिलिप्पियों २:५) । वह गाली सुनकर

किसी को भी गाली नहीं देता था। वह किसी को कोसता नहीं था, किसी को श्राप नहीं देता था। वह किसी का बुरा नहीं चाहता था। वह सब से प्रेम रखता था। वह सब पर दया दिखाता था। वह अपने से बैर रखने वालों के लिये भी प्रार्थना करता था। और उसकी बातों को सबसे पहला स्थान देता था। प्रभु यीशु का सा सवभाव रखने का अर्थ यही है। उसके आदर्शों पर चलकर हम उसके समान बन सकते हैं। और यही हमारे जीवनों का उद्देश्य भी होना चाहिए। क्योंकि यदि हम स्वर्ग में यीशु के साथ जाना चाहते है, तो हमें उसी की तरह स्वर्ग में रहने के योग्य भी बनना चाहिए। क्योंकि बाइबल में लिखा है कि स्वर्ग एक पवित्र स्थान है। परमेश्वर पवित्र है, और इसी लिये वह स्वर्ग में है। यीशु पवित्र है, और इसलिये वह स्वर्ग में है, जहां से वह उन लोगों को लेने के लिये आएगा जिन्हों ने अपने आप को उसके समान पवित्र बना लिया है। और इस बात पर गौर वह स्वर्ग में है, जहां से वह उन लोगों को लेने के लिये आएगा जिन्हों ने अपने आप को उसके समान पवित्र बना लिया है। और इस बात पर गौर करें, कि हमे पवित्र बनाकर स्वर्ग में रहने के योग्य बनानें के लिये यीशु ने कितना बड़ा त्याग और बलिदान किया है। उसने स्वर्ग को छोड़ा था। वह एक इन्सान बना था। उसने मनुष्यों के हाथों से दुख उठाए थे। परमेश्वर ने हमारे सारे पापों को उस पर थोपकर उसे हमारे पापों के कारण दन्ड दियां था। यीशु को यह सब करने की आवश्यकता नहीं थी, यदि वह स्वयं अकेला ही स्वर्ग में रहना चाहता। परन्तु उस ने यह सब किया, क्योंकि वह चाहता है कि आप और मैं और जगत के सारे लोग उसके साथ स्वर्ग में रहे।

जिस प्रकार हम ज़मीन पर उन लोगों के साथ रहना चाहते हैं जिन्हे हम अपना कहते हैं। मां–बाप अपने बच्चों के साथ रहना चाहते हैं। और बच्चे अपने माता–पिता और भाई–बहनों के साथ रहना चाहते हैं। और अगर हम कुछ समय के लिये

एक–दूसरे से बिछड भी जाते हैं, तो हम उस समय की बाट जोड़ते हैं जब हम फिर से इकटठें हो जाएंगें । ऐसे ही हमारा स्वर्गीय पिता भी यह लालसा रखता है, कि हम उसके पास जाकर सदा उसके साथ रहें । क्या आप ने उस यात्रा पर जाने की तैयारी कर ली है ? क्या आप परमेश्वर के पास जाकर उसके साथ रहने के लिये तैयार हैं ? परमेश्वर आपकी प्रतीक्षा कर रहा है । अपना मन फिराएं । उसके पास आएं ।

जब यीशु का जन्म हुआ था

मैं आपके सामने उन बातों का प्रचार करता हूं जिनके बारे मे हमें बाइबल में मिलता है। और बाइबल हमे यीशु मसीह के बारे में बताती है। यीशु का अर्थ है"उद्धार करने वाला" और मसीह का अर्थ है, "जिसे परेमेश्वर ने नियुक्त किया है" यीशु मसीह, जिसके बारे मे हमें बाइबल में मिलता, वह व्यक्ति था जिसे परमेश्वर ने जगत का उद्धार करने के लिये पृथ्वी पर भेजा था। यीशु मसीह का जन्म आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था। और क्योंकि पश्चिमी देशों में रहनेवाले लोग आज अधिकांश रुप में प्रभु यीशु मसीह को मानते हैं, इसलिये आज अनेकों लोगों को यह ग़लतफ़हमी कि यीशु मसीह यानि"जीसस काईस्ट" का जन्म किसी पश्चिमी देश में हुआ था। पर वास्तव में, इस से भी पहले कि अमरीका जैसे देश का लोगों को पता लगता, यीशु मसीह को मानने वाले लोग भारत और सारे एशिया में विद्यमान थे। क्योंकि यीशु का जन्म एशिया में हुआ था। जिस जगह को आज हम पलीस्तीन कहते हैं, और जो एशिया में है, वहां, यरुशलेम में, यीशु का जन्म हुआ था।

यीशु के जन्म से पहले अनेकों भविष्य द्वाणियां की गई थी, जिन के बारें मे आज हम बाइबल के पुराने नियम में पढ़ते है। यह भविष्यवाणियाँ यीशु के जन्म सें सैंकड़ों साल पहले की गई थीं–पर वे सब की सब यीशु के जीवन में ठीक वैसे ही पूरी हुई थीं जैसे कि पहले कहा गया था। उन भविष्यद्वकताओं ने बताया था कि यीशु मसीह का जन्म कहां होगा और किस प्रकार की परिस्थितियों मे होगा, और किस प्रकार वह पकड़वाया जाएगा, मारा जाएगा, और गाड़ा जाएगा और फिरे से जी उठेगा। इसी प्रकार से एक और विशेष बात जो उन भविष्यद्वक्ताओं यीशु के

बारे में बताई थी वह यह थी, कि यीशु मसीह का जन्म एक कुंवारी से होगा । (यशायाह ७ :१४) । और यह आवश्यक भी था । क्योंकि यदि परमेश्वर द्वारा नियुक्त उद्धारकर्ता सभी अन्य इन्सानों की तरह से ही जन्म लेता तो उसमे क्या विशेष बात होती सभी मनुष्यों का जन्म एक समान होता है किन्तु यीशु मसीह का जन्म एक अद्भुत घटना थी । उसका जन्म किसी इन्सान की मर्जी या किसी मनुष्य की योजना से नही हुआ था । पर यीशु मसीह का जन्म परमेश्वर की इच्छा से हुआ था ।

बाइबल में लिखा है,कि यरुशलेम मे गलील के नासरत नगर में मरियम नाम की एक कुंवारी रहती थी, जिसकी मंगनी हो चुकी थी । पर इससे पहले कि उसका विवाह होता, एक दिन उसके पास एक स्वर्गदूत आया जिसने उसे यह आश्चर्यपूर्ण समाचार दिया कि, तुझ पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है, और प्रभु का पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा और परमप्रधान की सामर्थ तुझ पर छाया करेगी, और परमेश्वर की इच्छा से तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा, और तू उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा । (मती 1:18-25,लूका 1:26-38) । जिस समय बाइबल को लिखा जा रहा था, उस समय परमेश्वर अपनी इच्छा को मनुष्यों पर प्रकट करने के लिये स्वर्गदूतों को लोगों के पास भेजा करता था । लेकिन आज वह ऐसा नहीं करता है, क्योंकि आज हमारे पास बाइबल है जिसमें परमेश्वर ने अपनी इच्छा को सदा के लिये सब मनुष्यों पर प्रकट कर दिया है । मरियम को यीशु के जन्म के लिये परमेश्वर ने इसलिए चुना था क्योंकि मरियम परमेश्वर से डरती थी । और उसके वचन पर विश्वास करती थी । लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि यीशु को जन्म देने के कारण मरियम "परमेश्वर की माँ" बन गई । यीशु परमेश्वर था । क्योंकि यीशु मसीह में होकर परमेश्वर मनुष्यों का उद्धार करने को जगत में आया था । उसने मरियम को अपने जन्म के लिए चुना था । वह एक ज़रिया थी । एक उपाय थी । जिसके

द्वारा परमेश्वर का पुत्र इस पृथ्वी पर आया था । लेकिन असका अर्थ यह नहीं है कि आज हम मरियम को वह स्थान दें जो स्थान परमेश्वर का है । देखने में आता है कि अनेको लोग आज मरियम से प्रार्थना करते हैं । उसकी पूजा करते है । अब यदि परमेश्वर ऐसा चाहता कि मनुष्य मरियम को "परमेश्वर कि माँ "कहें और उसकी पूजा तथा उपासना करें तो वह अवश्य ही हमें बाइबल में इस बारे में बताता । परन्तु इसके विपरीत बाइबल में हम पढ़ते है कि जब यीशु ने परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करना आरम्भ किया था और जब मरियम ने उस से कुछ कहना चाहा था तो यीशु ने उससे कहा था कि "हे महिला मुझे तुझसे क्या काम (यूहन्ना 2:4) । और एक बार जब यीशु लोगों की एक भीड़ में प्रचार कर रहा था और किसी ने आकर उस से कहा था कि तेरी माता और तेरे भाई बाहर खड़े हैं । और तुझ से मिलना चाहते हैं । तो यीशु ने जवाब देकर कहा था कि कौन है मेरी माता, और कौन हैं मेरे भाई । और अपने अनुयायीयों कि ओर अपना हाथ बढ़ा कर उस ने कहा देखो मेरी माता और मेरे भाई ये हैं । क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता कि इच्छा पर चले, वही मेरा भाई और बहन और माता है । " (म त्ती12 : 46-50) । और फिर जब यीशु कूस पर मरने पर था तो उसने अपने एक चेले को मरियम को दिखाकर कहा था । "कि हे नारी देख यह तेरा पुत्र " और उस चेले से यीशु ने कहा था । कि " देख यह तेरी माता है । " (यूहन्ना 19 :26-27) । सो इन बातो से यह स्पष्ट हो जाता है कि यीशु ने स्वयं इस बात को प्रकट किया था कि मरियम अन्य लोगों कि ही तरह एक इन्सान थी और न तो हमें उसे ईश्वर कि माता कहना चाहिए और न उसे परमेश्वर कि तरह उसे मानना चाहिए ।

एक और बात यीशु के जन्म के बारे में बाइबल में हम पढ़ते हैं । कि जब यीशु का जन्म हुआ था तो उसका समाचार परमेश्वर ने सबसे पहले कुछ गड़रियों को दिया था । वे गड़रिये

रात को मैदान में रहकर अपनी भेंड़ बकरियों कि रखवाली कर रहे थे। प्रत्यक्ष ही है, कि वह समय गर्मियों का रहा होगा। क्योंकि रात को मैदान मे वे चरवाहे अपने झुन्ड कि रखवाली कर रहे थे। और तभी एकाएक ऐसा हुआ कि परमेश्वर का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ और उसने उन से कहा कि " मै तुम्हे बड़े आन्नद का सुसमाचार सुनाता हूँ जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है। और यही मसीह प्रभु है। " (लूका 2:8-11)। अब वह दिन कौन सा दिन था। या वह कौन से महीने कि कौन सी तारीक थी। जिस दिन जगत के उद्धारकर्ता का जन्म हुआ था। यह तो हम नहीं जानते क्योंकि परमेश्वर नहीं चाहता कि हम वर्ष में केवल एक ही दिन उसको याद करें। किन्तु परमेश्वर ने हमे यह अवश्य बताया है कि जब यीशु मसीह का जन्म हुआ था तो उस दिन जगत का उद्धारकर्ता पृथ्वी पर आया था और इस सुसमाचार को सबसे पहले परमेश्वर ने ऐसे लोगो को दिया था जिनका समाज में कोई विशेष स्थान नही था। वे लोग गड़रिये थे। साधारण लोग थे। जो मेहनत मजदुरी करके प्रतिदिन गुज़ारा किया करते थें और ऐसा परमेश्वर ने इस लिए किया था कि इस से हम ऐसा सीखें कि यीशु सब के लिए जगत में आया था और सब को उसकी आवश्कता है। क्योकि उद्धार कि आवश्कता सबको है। यीशु स्वर्ग से किसी एक विशेष धर्म या जाति के लोगों के लिए इस पृथ्वी पर नहीं आया था। वह किसी एक देश या समाज के लिए इस पृथ्वी पर आया था। वह सारे जगत के सब लोगों के लिए आया था। और जैसे उस समय सब को उसकि आवश्कता थी उसी प्रकार आज भी सब को उसकी आवश्कता थी उसी प्रकार आज भी सबको उसकी आवश्कता है। यीशु ने स्वयं यह कहा था कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई भी उस पर विश्वास लाए वह नरक में नाश न हो परन्तु स्वर्ग

मे अन्नतं जीवन पाए । (यूहन्ना 3-16) । और जब उस ने अपने सुसमाचार को प्रचार करने की आज्ञा अपने चेलों को दी थी तो उसने उनसे कहा था । कि तुम सारे जगत में जाकर मेरे सुसमचार का सब लोगों में प्रचार करो और जो सुनकर विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा उसका उद्वार होगा । (मत्ती 28| 18-20) मरकुस (6:15-16) ।

यीशु का सुसमाचार उसकी मृत्यु है । (१ कुरिन्थियों १५:१–४) । यीशु इस पृथ्वी पर अपने को पापियो के लिए देने को आया था । जबकि यीशु का जन्म एक अद्भुत घटना थी, उस की मौत एक सुसमाचार है । क्योंकि यदि यीशु परमेश्वर की योजनानुसारे, पापियों के लिये, जगत के पापों का प्रायश्चित करने को न मरता, तो उसके जन्म से हमें कोई विशेष लाभ न होता । इसीलिये बाइबल में उसके जन्म से भी अधिक उसकी मृत्यु के बारें मे लिखा गया है । उसके चेलों ने उसके जन्म का प्रचार सब जगह जा–जाकर किया था । जबकि आज संसार भर मे लोग यीशु का जन्म–दिन बड़ी ही धूम–धाम से मनाते हैं, इसके विपरीत बाइबल से हमे यह शिक्षा मिलती है, कि हमे यीशु की मौत को याद करना चाहिए । अपनी मृत्यु से पूर्व स्वयं यीशु ने एक भोज की स्थापना की थी, जिसे बाइबल में प्रभु भोज कहकर सम्बोधित किया गया है, और यीशु ने अपने अनुयायीयों से कहा था कि मेरे बलिदान को स्मरण करने के लिये तुम इस भोज में शामिल हुआ करना । (मत्ती 26:26-28) । और वे लोग जो सचमुच में यीशु के अनुयायी हैं और उसके महान् बलिदान के महत्व को समझते हैं, वे आज भी बाइबल की शिक्षानुसार हरएक सप्ताह के पहले दिन, यानि रविवार के दिन, एकत्रित होकर प्रभु–भोज में भाग लेकर प्रभु यीशु मसीह और अपने उद्धारकर्ता के महान बलिदान को याद करते हैं । (प्रेरितों 20:7; कुरिन्थियों ११:२३–२६) ।

क्या आप अपने जीवन में प्रभु यीशु मसीह की आवश्यकता

को अनुभव करते हैं? प्रभु यीशु आज आप का भी उद्धारकर्ता बन सकता है । उसने आपके लिये भी अपने आप को बलिदान किया था । वह आप से प्रेम करता है । वह आपको बचाना चाहता है । वह आप के लिये भी आया था । क्या आप उसे अपने जीवन मे स्थान देंगें ?

जिस दिन यीशु मरा था

इस कार्यक्रम में आपको यीशु मसीह की मृत्यु का सुसमाचार सुनाता हूँ। जब हम मृत्यु के बारे मे सुनते हैं तो हमें अच्छा नहीं लगता। वास्तव में मृत्यु शब्द से ही हमें डर लगता है। जब किसी का जन्म होता है तो लोग खुशियां मनाते हैं। पर जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो लोग शोक मनाते हैं। मृत्यु एक ऐसी चीज है जिसके भीतर हमें कुछ भी अच्छा नज़र नहीं आता। क्योंकि मृत्यु हम से हमारे प्रिय जनों को और हमारे सम्बन्धियों को छीन लेती है। मृत्यु मे शोक, विलाप और कष्ट होता है। हम में से कोई भी मरने की कामना नहीं करता। मृत्यु एक भयानक शब्द है। लेकिन यीशु मसीह की मृत्यु एक सुसमाचार है। और सुसमाचार का अर्थ है, एक खुशी की खबर। यानी यीशु मसीह की मृत्यु एक सुसमाचार है। और सुसमाचार का अर्थ है, एक खुशी की ख़बर। यानी यीशु की मौत में एक खुशी का समाचार है। बाइबल में लिखा है "क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा।" और परमेश्वर ने अपने प्रेम को हमारे ऊपर इस बात से प्रकट किया "कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।" (रोमियों ५:६–८)। मसीह केवल मरा ही नहीं, परन्तु वह हमारे लिये मरा था। वह पापियों के लिये मरा था। इस से भी पहले कि इस संसार में हमारा जन्म होता और इस से भी पहले कि हम बड़े होकर परमेश्वर के लेखे में पृथ्वी पर पहला पाप करते हमारे पापों का प्रायश्चित किया जा चुका था। यीशु हमारे पापों के कारण और हमारे सभी अधर्म के कामों के कारण, परमेश्वर की मर्जी से क्रूस के ऊपर हमारे लिये मारा जा चुका था। इसलिये यीशु की मौत हम सब के लिये एक खुशी का पैग़ाम और एक सुसमाचार

है । क्योंकि यदि परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु के द्वारा हम सब के पापों का प्रायश्चित कर दिया है, तो अब हमें नरक का भय नहीं होना चाहिए । बल्कि उसके स्थान पर अब हमारे पास स्वर्ग में प्रवेश करने की आशा होनी चाहिए । क्योंकि मसीह ने हमारे पापों का दन्ड अपने ऊपर उठा लिया है । क्या इस पृथ्वी पर इस से भी बड़ा कोई और दूसरा सुसमाचार हो सकता है ?

जिस दिन यीशु कूस प्रर मरा था वह दिन इस ज़मीन पर एक सब से बड़ा दिन था । क्योंकि उस दिन परमेश्वर का एकलौता पुत्र सारे जगत के पापों के लिये मरा था । यीशु इस पृथ्वी पर आने से पहले स्वर्ग में परमेश्वर के साथ था । और जब वह इस पृथ्वी पर आया था तो परमेश्वर उसके साथ था । उसने कहा था, कि जो कुछ मैं बोलता हूं वह अपनी ओर से नहीं बोलता परन्तु परमेश्वर मेरे द्वारा बोलता है । और जो कुछ मैं करता हूं वह अपनी ओर से नहीं करता परन्तु परमेश्वर मुझ में रहकर सामर्थ के काम करता है (यूहन्ना १४:६–११) । जब नीकुदेमुस यीशु से मिलने आया था तो उसने यीशु से कहा था कि " है रब्बी , हम जानते हैं, की तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है क्योंकी कोई इन चिन्हों को जो तू दिखाता है । यदि परमेश्वर उसके साथ न हो तो नही दिखा सकता ।" (यूहन्ना ३:२) । परमेश्वर आदि से यीशु के साथ था । और आज भी यीशु स्वर्ग में परमेश्वर के साथ है । लेकिन उस दिन, जिस दिन यीशु कूस पर पापियों के लिये मरा था परमेश्वर ने यीशु को छोड़ दिया था । यह वह समय था जबकि उसे एक सहारे की आवश्यकता थी । यह वह वक्त था जबकि यीशु को परमेश्वर की सबसे अधिक ज़रूरत थी । पर ठीक उसी समय पर परमेश्वर ने भी यीशु का साथ छोड़ दिया था । उस समय का वर्णन करके बाइबल कहती है कि जब यीशु कूस पर लटका हुआ था तो "दोपहर से लेकर तीसरे पहर तक उस सारे देश में अंधेरा छाया रहा । तब

तीसरे पहर के निकट यीशु ने(अपनी भाषा में) बड़े शब्द से पुकार कर कहा, "एली,एली, लमा शबक्तनी ?" अर्थात् हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों छोड़ दिया ?" (मत्ती २७:४६) ।

जबकि क्रूस की मृत्यु एक बड़ी ही कष्टदायी मौत होती थी– क्योंकि जिस व्यक्ति को कूस पर चढ़ाया जाता था उसे पहले कोड़ो से पीटा जाता था और फिर कूस के साथ बांधा जाता था । फिर उस व्यक्ति के हाथ और पांव उस कूस पर कीलों से ठोंके जाते थे । और फिर कूस को उठाकर खड़ा किया जाता था और उसके निचले भाग को गड्ढें मे दबा दिया जाता था–– और इस प्रकार उस व्यक्ति को मरने के लिये छोड़ दिया जाता था । लेकिन यीशु को इन सब बातों के बारें मे पता था । वह जानता था कि कूस की मौत कैसी मौत होती है । और वह यह भी जानता था, कि उसे भी क्रूस पर चढ़ा कर मारा जाएगा । क्योंकि वह तो इसी उदेद्श्य को लेकर इस जगत में आया था । पर जब यीशु कूस पर चढ़ाया गया था तो उसके ऊपर एक बहुत भारी बोझ को भी रखा गया था– और वह बोझ था जगत के सारे पापों का बोझ । भविष्य द्वक्ता यशायाह ने यीशु की मृत्यु से आठ सौ वर्ष पूर्व उसके बारे में लिखा था, कि "निश्चय उस ने हमारे रोगों का सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया, तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा । परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया, हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं । क्योंकि हम तो सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए थे, हम मे से हर एक ने अपना–अपना मार्ग लिया था, और परमेश्वर ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया ।" (यशायाह ५३:४–६) ।

जिस दिन यीशु को कूस पर चढ़ाया गया था, उस दिन परमेश्वर ने जगत के सारे अधर्म के बोझ को लेकर यीशु के

ऊपर रख दिया था । आप को और मुझे और सारे जगत के सब लोगों को पाप के दन्ड से मुक्त करने के लिये उस दिन परमेश्वर ने सारे जगत के पाप के बोझ को अपने पुत्र यीशु मसीह पर लाद दिया था । उस दिन यीशु, परमेश्वर की दृष्टि में, आपके और मेरे और सारे जगत के सब लोगों के पापों के लिये कूस के ऊपर दन्ड पा रहा था । किन्तु इस बात पर विचार करके देखें, कि उस समय यीशु को कैसा अनुभव हो रहा होगा ? शारीरिक पीड़ा तो थी ही, पर उससे भी बढ़कर उसके ऊपर पापों का वह बड़ा बोझ था जिन्हें उस ने स्वयं नही किया था । वह हमारे पापों के लिये दन्ड पा रहा था । पृथ्वी पर जितने भी पापी, अधर्मी और अपराधी हैं उन सब के पाप, अधर्म और अपराधों का दन्ड उस दिन यीशु को मिल रहा था । और यही वह एक ऐसा कारण था जिसकी वजह से परमेश्वर ने अपने पुत्र को उस दिन छोड़ दिया था । क्योंकि परमेश्वर वहां नहीं रह सकता जहां पाप है । यीशु के ऊपर, उस दिन कूस पर, उन सब बुरे कामों और उन सब पापों और अधर्म के कामों का दोष था जिनके लिये आप और मैं और सारा जगत दोषी है । और इसलिए परमेश्वर ने उस दिन यीशु को छोड़ दिया था– क्योंकि परमेश्वर उस जगह पर नहीं रह सकता जहां पाप रहता है, वह उस व्यक्ति के साथ नहीं रह सकता जिसमे पाप है क्योंकि परमेश्वर पवित्र और धर्मी है । उस दिन यीशु ने हम सब के पापों को अपने ऊपर ले लिया था । वह दन्ड जो हमे मिलना चाहिए था उस ने स्वयं अपने ऊपर ले लिया था । यही कारण है कि क्यों आज यीशु की मौत का समाचार आप के और मेरे और सारे जगत के लिए एक सुसमाचार है । यीशु की मौत के कारण अब परमेश्वर आप को और मुझे, आपके और मेरे पापों का दन्ड नहीं देगा, अर्थात अब वह हमे हमारे पापों के कारण नरक मे नहीं जाने देगा । यदि हम आज यीशु मसीह में यह विश्वास करते हैं कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित करने को कूस के ऊपर मारा गया था । यीशु ने कहा था, कि यदि

अपने सारे मन से उस मे हम विश्वास लाएंगे और अपने सब पापों से मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेंगे तो वह हमारे पापों से हमारा उद्धार करेगा । (मरकुस १६:१६, प्रेरितों २:३८) । और यदि हम अपने जीवन भर उसकी शिक्षाओं पर चलकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे तो वह हमें स्वर्ग में हमेशा का जीवन देगा । अपनी मृत्यु से पूर्व यीशु ने कहा था कि "परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए ।" (यूहन्ना ३:१६) ।

सो परमेश्वर आपको स्वर्ग मे हमेशा का जीवन देना चाहता है । वह आप को पाप के दन्ड़ से बचाना चाहता है । और इस बात को उस ने अपने पुत्र यीशु मसीह को जगत में भेजकर प्रकट किया है । जिसका सुसमाचार में आप को सुनाता हूं । क्योंकि आपकी और मेरी और सारे जगत की केवल वही एक आशा है । क्योंकि हम सब पापी हैं । और हम इस बात से इन्कार नहीं कर सकते । और परमेश्वर पवित्र है । और इस कारण प्रत्येक मनुष्य अपने ही पापों के कारण परमेश्वर से अलग है और उस से दूर है । हम परमेश्वर का भजन और स्तुति करके अपने पापों को नहीं मिटा सकते । हम प्रार्थनाएं और पूजा–पाठ करके अपने पापों से छुटकारा नहीं पा सकते । हम भले और अच्छे काम करके अपने पापों को नहीं धो सकते । हम बाइबल पढ़कर और "चर्च" मे जाकर अपने पापों से मुक्ति नहीं पा सकते । पर यदि हम अपने पापों से छुटकारा पाकर अपने परमेश्वर के साथ अपना मेल करना चाहते हैं, और यदि हम अपने पापों से मुक्ति पाकर एक पापी से पवित्र और एक अधर्मी से धर्मी बनना चाहते हैं तो हमें उद्धार कर्ता प्रभु यीशु मसीह की आज्ञाओं को मानने और उन पर चलने की आवश्यकता है । क्योंकि परमेश्वर की बाइबल मे लिखा है कि" पुत्र होने पर भी उसने दुख उठा–उठाकर आज्ञा

माननी सीखी और " इस प्रकार, "सिद्ध बनकर, अपे सब आज्ञा माननेवालों के लिये सदा काल के उद्धारका कारण हो गया ।" (इब्रानियों५:८,९) क्या आप आज उद्धारकर्त्ता यीशु की आज्ञा मानकर अपने सब पापों से मुक्ति पाना चाहते हैं? यीशु ने कहा था, कि जो व्यक्ति उस में विश्वास लाएगा वह नाश न होगा परन्तु हमेशा का जीवन पाएगा । वह आप को पाप के दन्ड से बचाना चाहता है । वह आप को स्वर्ग मेअनन्त जीवन देना चाहता है । क्या आप अपना मन फिराकर उसके पास आने का तैयार हैं?

यीशु पृथ्वी पर क्यों आया था?

आज हम सन् १९९२ में रहते हैं, और यह इस बात का प्रामाण है, कि आज से १९९२ साल पहले प्रभु यीशु मसीह का जन्म पृथ्वी पर हुआ था। क्योंकि आज हम अपने समय का हिसाब उसके जन्म से ही लगाते हैं। यह बात इस सच्चाई के महत्व को भी दर्शाती है, कि यीशु का व्यक्तित्व कितना बड़ा और अहम था। क्योंकि उसके जन्म से हम वर्तमान समय का अनुमान लगाते हैं, और उसके इस पृथ्वीं पर आने के पहले के समय को हम ईसवी पूर्व कहकर सम्बोधित करते हैं। आप चाहे यीशु मे विश्वास करते हों या न करते हों, पर जितनी बार भी आप किसी कागज़ पर तिथि या तारीख़ लिखते हैं, तो आप इस बात को स्वीकार करते हैं कि आज से १९९२ वर्ष पूर्व यीशु मसीह का जन्म हुआ था।

पर यीशु ने पृथ्वीं पर जन्म क्यों लिया था ? इस ज़मीन पर आने का उसका उद्धेश्य क्या था ? क्या वह पापियों को दन्ड़ देने के लिये संसार में आया था ? क्या वह बुराई के ऊपर विजय प्राप्त करने के लिये आया था ? क्या वह अन्धों को आंखें देने के लिये और रोगियों को चंगा करने के लिये आया था ? क्या वह पृथ्वीं पर से ग़रीबी और बीमारियों को दूर करने के लिये आया था ? कौन था वह ? क्या वह अनेकों भगवानों में से एक भगवान था ? या क्या वह बहुतेरे देवताओं मे से एक देवता था ? या फिर क्या वह बहुतत से पैग़म्बरों और अवतारों में से कोई एक अवतार था ? कौन था वह यीशु, जो आज से १९९२ वर्ष पूर्व इस पृथ्वी पर आया था, और वह इस ज़मीन पर किस उद्धेश्य से आया था ? यदि इस प्रश्न का उतर हम स्वयं यीशु से जानना चाहें तो हमे यह जवाब मिलेगा : यीशु ने कहा था, कि परमेश्वर

ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु अनन्त जीवन पाए । (यूहन्ना ३:१६)यीशु ने कहा था, कि मै ज़मीन पर पाप में खोए हुए लोगों को ढूंढने और उनका उद्धार करने को आया हूं । (लूका ६:१०) । प्रभु यीशु ने कहा था, कि मैं इसलिये आया हूं, कि लोग जीवन पाएं और बहुतायत से पाए । (यूहन्ना १०:१०) । और उसने यह भी कहा था, कि मैं जगत की ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे वह अंधकार में न रहे । (यूहन्ना १२:४६) ।

यीशु,परमेश्वर का एकलौता पुत्र, पापियों के लिये इस जगत में आया था । वह उन लोगों को नाश होने से बचानें के लिये आया था, जो पाप में नाश हो रहे थे । वह पाप के अन्धकार में खोए हुए लोगों के बीच में एक रौशनी बनकर आया था । वह पाप में मरे हुए लोगों को जीवन देने के लिये आया था । और इस महान कार्य को पूरा करने के लिये उस ने दो कठिन रास्तों को चुना था । जिन में से एक यह था, कि उसने अपना जीवन पापियों के साथ और उन के बीच मे रहकर बिताया था । क्योकि ज्योति यदि अंधकार मे न चमके तो उस से क्या लाभ होगा ? और यदि डॉक्टर रोगियों के सम्पर्क मे न आए तो उस से क्या लाभ होगा ? यीशु के लिये यह काम वास्तव में बड़ा ही कठिन था । क्योंकि वह स्वर्ग से आया था और वह पवित्र था । लेकिन फिर भी पापियों के बीच मे रहकर उसे एक ऐसा निष्पाप और पवित्र जीवन व्यतीत करना था जो परमेश्वर की इच्छा से था और जो सब लोगों के लिये एक अदर्श बन सकता था, जिस पर चलकर पापी लोग परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करने के योग्य बन सकते थे । इसलिये यह काम कठिन था । और मनुष्यों से तो यह काम बिल्कुल असम्भव था । पर यीशु ने इस असम्भव काम को अपने प्राणों को देकर पूरा किया था । क्योंकि जब वह मनुष्य के स्वरुप में होकर एक खरा, निष्कलंक और पवित्र जीवन

व्यतीत करने का प्रयत्न कर रहा था, तो लोग उसका उपहास करते थे, उसकी हंसी उड़ाते थे, और यही बात उसकी मौत का कारण बन गई थी। क्योंकि जैसे आज कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने स्वार्थ के लिये और अपनी बुराईयों को छिपाने के लिये सच्चाई और अच्छाई का विरोघ करते हैं। ऐसे ही उस समय भी, जब यीशु इस पृथ्वी पर आया था, कुछ लोग ऐसे थे जो उसकी खरी और सच्ची बातों को बर्दाश्त नहीं कर सके। उन्होंने हर प्रकार से चाहा था, कि वे किसी तरह से यीशु को गलत साबित कर दें। लेकिन जब उनकी हर एक कोशिश नाकाम हो गई,तो उन्होने उस पर झूठे दोष लगाने आरम्भ कर दिये। और यहां तक, कि उन्होंने कुछ लोगों को लालच देकर यीशु के विरोघ मे गवाही देने को भी राजी कर लिया। और इसका परिणाम यह हुआ, कि यीशु को उस समय के सरकारी कानून के अनुसार एक कूस पर लटकाया गया, जहां उसने एक अपराधी की तरह मौत की सज़ा पाई।

उस दिन, जब यीशु को कूस पर चढ़ाया गया था, वे लोग जो उसके विरोधी थे खुश हो रहे थे। क्योंकि वे ऐसा सोचते थे, कि उस दिन वे एक ऐसे आदमी को खुलेआम सजा दिलवा रहे थे जो अपने कामो और शिक्षाओं के लिये साघारण लोगों में तो बड़ा ही प्रसिद्ध होता जा रहा था, परन्तु उनके अपने लिये बड़ा ही ख़तरनाक साबित हो रहा था। वे प्रसन्न थे, क्योंकि वे उस से बदला ले रहे थे। पर वे इस बात से अपरीचित और अनजान थे कि वास्तव में वे परमेश्वर की एक बहुत बड़ी योजना को, और यीशु के बारे में की गई अनेकों भविष्यवाणियों को, और मनुष्य के उद्धार की योजना को, और यीशु के जगत में आने के उद्धेश्य को पूरा कर रहे थे। यीशु ने स्वयं अपने मरने से पहले यह कहा था,"कि जब तक गेहूं का दाना भूमि में पड़कर मर नहीं जाता, वह अकेला रहता है परंतु जब मर जाता है तो बहुत फल लाता है।" (यूहन्ना १२:२४)। अपने चेलों से उसने कहा था, कि

अवश्य है कि वह मारा जाए और गाड़ा जाए, और उसने कहा था कि अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन में फिर जी उठूंगा । पर उसके चेले भी इस बात को पचा न सके । क्योंकि उनके लिए ऐसा विश्वास करना कि कुछ लोग यीशु को पकड़कर मार देंगें एक बड़ी ही असम्भव बात थी । क्योंकि यीशु उनके लिये एक "सुपर मैन" था । वे उस यीशु को जानते थे, जो अंधों को आंखें और लंगड़ों को टांगे दे देता था । वे उस यीशु से परिचित थे ,जो आंधी और तूफ़ान को डाटंकर थाम देता था और वे उस यीशु के चेले थे जो होठों से बोल कर मुर्दो को जिन्दा कर देता था । उन के लिये ऐसा मानना कि यीशु को पकड़कर एक मेम्ने की तरह घात कर दिया जाएगा बिल्कुल असम्भव बात थी । और, इसीलिये, जब वह समय आया कि यीशु पकड़वाया जाए और मारा जाए, और जब एक भीड़ यीशु को पकड़ने के लिये आई तो यीशु के एक चेले ने अपनी तलवार उसे बचाने के लिये खीचं ली । पर यीशु ने अपने उस चेले से कहा, कि अपनी तलवार वापस काठी में रख ले, और उस से कहा, कि "जो कटोरा पिता ने मुझे दिया है क्या मै उसे न पीऊं ?" (यूहन्ना १८:११) ।

मौत का कटोरा यीशु पीने के लिये इस जगत में आया था । वह जानता था कि वह पकड़वाया जाएगा और वह मारा जाएगा । यह वह रास्ता था जिसे उसने स्वयं चुना था । वह स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर इसी लिये आया था । वह परमेश्वर का वह एकलौता पुत्र था जिसे परमेश्वर ने जगत के पापों का प्रायश्चित करने को भेजा था । वह अधर्म में मरे हुए लोगों को जीवन देने के लिये आया था लेकिन मौत के बिना जीवन नहीं है । और हमें जीवन देने के लिये उसने कूस की मौत उठा ली । कूस पर यीशु की मृत्यु कोई दुर्घटना नहीं थी । मनुष्यों के हाथो ने उसे कूस पर चढ़ाया था । पर उन हाथों को परमेश्वर ने अपनी मर्ज़ी को पूरा करने के लिये इस्तेमाल किया था: कि मैं अपना प्राण देता हूं कि उसे फिर ले लूं, कोई उसे मुझ से छीनता नहीं

बरन मैं उसे आप ही देता हूं, मुझे उसके देने का भी अधिकार है, और उसे फिर लेने का भी अधिकार है, यह आज्ञा मेरे पिता से मुझे मिली है। (यूहन्ना १०:१७,१८) ।

आज जबकि सारे संसार मे यीशु को उसका जन्म दिन मनाकर याद किया जाता है; लोगों ने उसके जन्म का एक दिन निश्चित कर दिया है, और उस दिन को वे " बड़ा दिन" कहते हैं, उस दिन वे खुशियां मनाते है ,और नाचतें गाते और दावतें उड़ाते हैं। तौंभी बाइबल की शिक्षा इसके बिल्कुल विपरीत हैं। बाइबल में यीशु के जन्म से भी अधिक उसकी मौत को महत्व दिया गया है। यीशु ने स्वयं अपने जन्म को याद करने की नहीं, पर अपनी मृत्यु को याद करने की आज्ञा दी थी। (मत्ती २६:२६–२८) । उसके चेलों ने उसके जन्म का नहीं, पर उसकी मृत्यु का प्रचार किया था। (प्रेरितों २:२२–४१) । क्योंकि उसकी मौत में एक खुशी का पैगाम है। उसकी मृत्यु एक सुसमाचार है। जिसका प्रचार सारे जगत मे करने की आज्ञा यीशु ने दी थी। हम उसके जन्म से नहीं, पर उसकी मृत्यु से उद्धार पाते हैं। यदि वह क्रूस पर हमारे पापों के बदले मे न मरता तो आज हमारे पास क्या आशा होती ? क्या हम कह सकते थे, कि हमारे पापों का प्रायश्चित हो चुका है ? क्या हम जान सकते थे कि परमेश्वर वास्तव में और कितना प्रेम हम से करता है ? क्योकि बाइबल में लिखा है, कि सारे जगत पर अपने प्रेम को परमेश्वर ने इस बात से प्रकट किया है कि जबै हम सब पापी ही थे उस ने यीशु मसीह को हम सब के पापों के लिये मरने को दे दिया। सो, अपने पाठ से यीशु मसीह के बारे में आज जिन दो ख़ास बातों को हम सीखते हैं वे ये हैं: कि यीशु ने एक ऐसा पवित्र और आदर्शपूर्ण जीवन व्यतीत किया था जो आज हमारे लिये एक नमूना होना चाहिए, जिसको अपनाने की हमें भरसक कोशिश करनी चाहिए। और दूसरे यह कि यीशु ने अपने प्राणों को देकर हमारे पापों का प्रायश्चित किया था। आज हम सब यीशु मसीह

में विश्वास लाकर और अपने सब पापों से मन फिराकर और अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर और यीशु के आदर्शपूर्ण जीवन का अनुसरण करके अपने जीवनों में इस बात को निश्चित कर सकते हैं, कि जब इस संसार को छोड़कर हम यहां से जाएंगे तो हम परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग में रहने के लिये जाएंगे । क्या आप ने अपने जीवनो मे यीशु को मान लिया है ?

यीशु किस लिये आया था?

एक बार फिर से हम इस बात के ऊपर विचार करेंगे कि यीशु इस जगत में किस लिये आया था। क्या आप जानते है कि जिस समय यीशु को कूस पर चढ़ाया गया था उस समय उसकी आयु केवल तेंतिस वर्ष की थी। अपनी मृत्यु से पूर्व यीशु ने बारह ऐसे आदमियों को चुना था जो हमेशा उसके साथ–साथ रहते थे। ये ही बारह उसके चेले कहलाए थे। उन्हें यीशु ने एक विशेष काम के लिये चुना था। क्योंकि यीशु जानता था, कि जिस काम को करने के लिये वह इस पृथ्वी पर आया था उसे पूरा करने के लिये उसे कुछ लोगो की आवश्यकता पड़ेगी। सो उन बारह चेलों को यीशु ने उस काम को पूरा करने के लिये तैयार किया था। जितने भी आश्चर्यकर्म यीशु ने किए थे और जितनी भी शिक्षाएं यीशु ने दी थीं, उन सबको उसने अपने उन चेलों के सामने किया था। वे उसके जीवन के और उसके कामों के और उसकी शिक्षाओं के गवाह थे। और न केवल यही, पर वे यीशु की मौत और उसके जी उठने के भी साक्षी थे। उन्हीं चेलों ने यीशु के जीवन से सम्बन्धित सारी बातों को बाइबल के नए नियम में हमारे लिये लिखा है। उन चेलों में से दो के नाम थे याकूब और यूहन्ना । एक बार वे दोनों यीशु के पास आकर कहने लगे कि उन दोनों को कुछ प्रमुख स्थान दिये जाएं। यह सुनकर अन्य चेलों को बड़ा ही बुरा लगा और वे आपस मे झगड़ने लगे। पर यीशु ने उन्हें पास बुलाकर उन से कहा, कि "तुम जानतें हो, कि जो अन्य जातियों के हाकिम समझे जाते हैं,वे उन पर प्रभुता करते हैं, और उन में जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम मे ऐसा नहीं होना चाहिए, वरन् जो कोई तुम में बडा होंना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने। और जो कोई तुम में

प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने । जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा–टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे ।" (मती २०:२०–२८; मरकुस १०:३५–४५) ।

जब हम संसार में अपने चारों तरफ़ देखतें हैं तो हम यह अनुभव करते है, कि इस पृथ्वी पर सभी लोग अपने आप को बड़ा बनाना चाहते हैं । और यह बात न केवल सांसारिक या शारीरिक रुप से ही सच है, पर आत्मिक और धार्मिक रुप से भी ऐसा ही देखने में आता है । लोग अपने आप को बड़े–बडे नामों और पदवियों से सम्मानित करना चाहते हैं । और बहुतेरे वे लोग भी जो अपने आप को प्रभु यीशु मसीह के सुसमाचार का प्रचारक कहते हैं ठीक ऐसा ही करते देखे जाते हैं । कोई पादरी–साहब कहलाता है, तो कोई बिशप– साहब कहलाता है, कोई पास्टर–साहब कहलाता है, तो कोई फ़ादर कहलाता है । वे लोग रेवरेन्ड और राईट–रेवरेन्ड जैस नामों से अपने आप को सम्मानित करवाना चाहते हैं । परन्तु दूसरी ओर, जब हम प्रभु यीशु मसीह के बारे मे पढ़ते और देखते हैं तो हमें यह अनुभव होता है, कि यधपि वह स्वर्ग से आया था, और वह पवित्र और महान् था, और बाइबल मे उसके बारे मे लिखा है कि वह परमेश्वर था और परमेश्वर का पुत्र था, तौभी उसने अपने आपको "मनुष्य का पुत्र" ही कहकर सम्बोधित करना चाहा था । क्योंकि वह एक मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आया था । और बार–बार हम पढ़ते हैं, कि उसने अपने आप को परमेश्वर का पुत्र न कहकर "मनुष्य का पुत्र" ही कहना अच्छा समझा था । क्योंकि उसमे नम्रता थी, वह हलीम था । वह हमें यह सिखाना चाहता था, कि बड़ा केवल एक परमेश्वर ही है, केवल वही इज्जत और सम्मान के योग्य है और हम सब इन्सान उसके बनाए हुए लोग हैं । हम अपने आप को अन्य लोगो से बड़ा समझकर घमन्ड न करें, पर दीनता से यीशु

की तरह एक दूसरे की सेवा करें । और बाइबल हमें यह सिखाती है कि,"जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो । जिसने परमेश्वर के स्वरुप मे होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश मे रखने की वस्तु न समझो । वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरुप घारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया । और मनुष्य के रुप में प्रकट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु,हां, कूस की मृत्यु भी सह ली ।" (फिलिप्पियों २:५–८) ।

यीशु वास्तव में बड़ा और महान था । वह स्वर्ग से आया था । वह परमेश्वर का एकलौता पुत्र था । उसमे कोई भी पाप नहीं था । उसके काम, उसके विचार, उसकी शिक्षाए,और उसका जीवन, सब कुछ महान था । पर तौभी उस ने अपने आप को छोटा बनाया था । और उसने अपने अनुयायीयों को सिखाया था कि जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने, और जो कोई तुम मे प्रधान होना चाहे वह सब का दास बने । और फिर उस ने अपना उदाहरण देकर कहा था कि जैसे कि मनुष्य का पुत्र भी इसलिये नहीं आया है कि लोगों से अपनी सेवा करवाए परन्तु इसलिये आया है कि वह खुद लोगों की सेवा करे । अकसर कहा जाता है, कि शिष्यों को अपने गुरुओं की सेवा करनी चाहिए और उनके पांव दबाने चाहिए । और संसार के गुरु ऐसा चाहते भी हैं । वे घमन्ड करते हैं, गर्व करते हैं और अपने चेलों को सेवकों की तरह इस्तेमाल करते हैं । पर यीशु ऐसा गुरु नही था । उसने कहा था, कि मैं सेवा करवाने नहीं पर सेवा करने आया हूं । और इस बात को और भी अच्छी तरह से अपने चेलों को सिखाने के लिये यीशु ने एक बार पानी लेकर अपने हाथों से अपने चेलों के पांव धोए थे । (यूहन्ना १३) । और एक अन्य जगह पर हम इस प्रकार पढ़ते हैं कि एक बार जब एक व्यक्ति ने यीशु के आगे घुटने टेककर उससे कहा था कि "हे उत्तम गुरु, अनन्त

जीवन का अधिकारी होने के लिये मै क्या करुं ? तो यीशु ने सबसे पहले उस से यह कहा था कि,"तू मुझे उत्तम क्यों कहता है ?" क्या तू नही जानता, कि,"कोई उत्तम नहीं, केवल एक अर्थात् परमेश्वर । " (मरकुस १०:१७,१८) । सो यीशु के जीवन से हम यह सीखते हैं, कि हमें अपने आप को बड़ा नहीं बनाना चाहिए । महिमा और बड़ाई हम सब को केवल परमेश्वर की करनी चाहिए, क्योंकि वही उसके योग्य है । पर आपस में एक दूसरे के साथ हमें दीनता से रहना चाहिए । यीशु ने कहा था, "क्योंकी कि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा, और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा ।" (लूका १४:११) । उसने अपने बारे में कहा था ,कि मैं अपनी सेवा करवाने नहीं आया , पर मै लोगों की सेवा करने आया हूं और, "बहुतो की छुड़ौती के लिये अपना प्राणों देने आया हूं ।"

जब यीशु को कोड़े लगाए जा रहे थे और उसके हाथ और पावं कूस के ऊपर कीलों से ठोके जा रहे थे, तो बाइबल में लिखा है, कि यीशु बार–बार उन लोगो के लिये, जो उसे मार रहे थे और उसका उपहास उड़ा रहे थे और उसे कूस पर टांग रहे थे, यह कहकर प्रार्थना कर रहा था, कि परमेश्वर तू इन लोगो को क्षमा करना, क्योंकि ये लोग नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं वे लोग परमेश्वर की योजना से अनजान थे । वे अपनी समझ में एक अपराधी को दन्ड दे रहे थे । पर यीशु जानता थ, कि उसके साथ क्या हो रहा था । वह जानता था, कि क्यों उसका इतना भरी निरादर किया जा रहा था । वह जानता था, कि उसे क्यों मारा और पीटा जा रहा था । और वह जानता था ,कि उसे कूस पर चढ़ाकर क्यों एक अपराधी की तरह दन्ड दिया जा रहा था । क्योंकि उसने कहा था, कि मैं बहुतो की छुडौती के लिये अपना प्राण देने आया हूं । वह परमेश्वर की इच्छा से सारे जगत के अपराधों की सजा उठा रहा था । वह आप की और मेरी छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे रहा था । क्योंकि सारा संसार पाप की

कैद में था । पाप और शैतान ने प्रत्येक मनुष्य पाप का दास था और शैतान उस पर प्रभुता करता था । पर यीशु प्रत्येक मनुष्य को पाप के दासत्व से और शैतान की प्रभुता से छुटकारा दिलवाने के लिये आया था । वह हर एक इन्सान को नरक में जाने से बचाने के लिये आया था । क्योंकि प्रत्येक मनुष्य पापी है और पाप का दन्ड मृत्यु है । इसलिये प्रत्येक मनुष्य अपने ही पापों के कारण नरक में जाने के योग्य है । किन्तु, परमेश्वर, हमारा स्वर्गीय पिता,जिसने हमे अपने स्वरुप पर बनाया है, वह हम सब से ऐसा प्रेम करता है, कि उसने हम सब के लिये अपने एकलौते पुत्र को दे दिया । ताकि अपने पापों का दन्ड हम न पाएं । सो हमारा दन्ड यीशु ने स्वयं अपने ऊपर उठा लिया । बाइबल मे लिखा है, कि वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया, और हमारे अधर्म के कामों के कारण वह कुचला गया और परमेश्वर ने हम सभी के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया । इसलिये जब वह सताया गया, तो उस ने अपना मुंह न खोला और अपने बचाव के लिये उसने कुछ भी न कहा । पर जैसे एक भेड़ बध होने के समय और एक भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उस ने भी अपना मुंह न खोला । (यशायाह ५३:४–७ ।

आज हम सब यीशु मसीह के उस महान् बलिदान के कारण अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके नरक में जाने से बच सकते हैं, और परमेश्वर और स्वर्ग के योग्य बन सकते हैं । जिन चेलों को यीशु ने अपने सुसमाचार का प्रचार करने को आरम्भ मे चुना था, उन सेयीशु ने कहा था कि तुम सारे जगत में जाकर मेरे सुसमाचार का प्रचार करो और जो सुनकर विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा वह अपने पापों से उद्धार पाएगा । (मती २८:१८–२०; मरकुस १६:१५–१६;) आप भी प्रभु यीशु मसीह में विश्वास लाकर और अपन पापों की क्षमा के लिये, (प्रेरितो २:३८), बपतिस्मा लेकर अपने सब पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं और प्रभु यीशु मसीह की शिक्षा पर चलकर अपने आप को स्वर्ग मे जाने

के लिये तैयार कर सकते हैं । यदि आप इन सब बातों के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं तो हमे आपके पत्रों का इन्तिज़ार रहेगा ।

यीशु जगत के पापों का प्रायश्चित करने को आया था

मुझे इस बात से सचमुच में बडी ही प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है, कि यद्यपि जबकि मैं आप मे से अधिकांश लोगों से व्यक्तिगत रुप से परिचित नहीं हूं, तौभी इस समय रेडियो के माध्यम से मैं आप के घर मे या जहां भी आप इस समय हैं आप से बातें कर सकता हूं। आज वास्तव में हम एक बड़े ही उन्नतिशील युग मे रहते हैं। आज हमारे पास साहित्य है, और रेडियो और टेलिविजन जैसे अनेक अन्य साधन हैं, जिनके द्वारा हमें बहुत सी बातों की जानकारी मिलती है। यदि ये सब साधन आज हमारे पास उपलब्ध न होते,तो आज हम सब अपने उन पूर्वजो की तरह पिछडे हुए होते जो आज से सैकैड़ों वर्ष पूर्व रहते थे। किन्तु, यदि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र इस पृथ्वी पर न आया होता तो इस समय मै आप से बातें न कर रहा होता, और न आप मेरी बातों को सुन रहे होते, यदि यीशु इस पृथ्वी पर न आया होता, तो आज हम सन् उन्नीस सौ बानवे में न रह रहे होते। क्योंकि सन् उन्नीस सौ बानवे का अर्थ है, कि आज से उन्नीस–सौ–बानवे– वर्ष पहले यीशु मसीह ने पृथ्वी पर जन्म लिया था। दुनिया भर मे हर साल जब कैलेन्डर छपते हैं, तो वे सब इस बात की साक्षी देते हैं कि प्रभु यीशु मसीह को संसार में आए इतने वर्ष बीत चुके हैं। प्रत्येक वर्ष जब लोग एक नया साल मनाते हैं तो वे सब इस बात की साक्षी देते हैं कि इतने साल पहले प्रभु यीशु मसीह ने पृथ्वी पर जन्म लिया था। हिन्दी में जिसे हम ई० स० कहते हैं, उसी को अग्रेजी में ए० डी० कहा जाता है। पर क्या आप जानते हैं कि ई० स० या ए० डी० का अर्थ क्या है ? ई० स० या ए० डी० का अर्थ है" हमारे प्रभु के

वर्ष में" यानी आज हम अपने प्रभु यीशु मसीह के वर्ष १९९२ मे रहते हैं ।

जब हम आज प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व पर विचार करते हैं तो हम देखते हैं कि प्रभु यीशु का व्यक्तित्व ऐसा अद्‌भुत और निराला था कि उसने संसार भर के लोगों के जीवनों के ऊपर एक गहरी छाप छोड़ दी है । आज संसार भर मे लाखों ऐसे लोग हैं जो अपना जीवन सच्चाई और ईमानदारी के रास्ते पर चलकर व्यतीत करना चाहते है । उनके दिलों मे प्रेम और क्षमा है । वे गिरे हुए निर्बल लोगों की सहायता करना चाहते हैं । वे बीमारों के लिये प्रार्थनाएं करते हैं, और उनकी सेवा करते हैं । वे यतीम बच्चों की और विधवाओं की सहायता करते हैं । और यह सब काम वे इस लिये करते हैं क्योंकि इनके बारे में उन्होंने यीशु से सीखा है । पर यीशु इस पृथ्वी पर क्यों आया था ?

यीशु मसीह , जिसका अर्थ है, परमेश्वर की ओर से नियुक्त उद्धारकर्ता,वास्तव में परमेश्वर का वह सामर्थी वचन था जिसके द्वारा आरम्भ मे परमेश्वर ने सारी सृष्टि को रचा था । किन्तु परमेश्वर ने उसे एक मनुष्य की देह पहनाकर ज़मीन पर भेज दिया था । और यही कारण है कि बाइबल में यीशु को बार–बार "परमेश्वर का पुत्र कहकर सम्बोधित किया गया है । यीशु ने स्वयं एक जगह यह कहा था, कि, परमेश्वर जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र जगत के लिये दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए । (यूहन्ना ३:१६) । यीशु को परमेश्वर ने जगत मे भेजा था । यीशु पृथ्वी पर लोगो को अनन्त जीवन देने के लिये आया था । जब हम बाइबल में आज यीशु मसीह के बारे में पढ़ते हैं, तो हम देखते हैं कि यीशु ने लोगो के सामने और विशेषकर अपने चेलोंके सामने बडे–बडे अद्‌भुत काम किए थे । वह उनके देखते समुद्र के पानी पर चला था । उसने मुर्दो को जिन्दा किया था । अपने हाथों मे थोडा सा भोजन लेकर उसने उसी से हजारो

लोगो को भोजन खिलाया था। आंधी और तूफ़ान को उसने डांटकर थाम दिया था। और कोई बीमारी ऐसी नहीं थी जिसे उसने चंगा नहीं किया था। जन्म के अन्धे,जन्म के लंगडे, कोढ़ी और अपाहिज उसके स्पर्ष से या उसके कह देने भर से तत्काल चंगे हो जाते थे। पर ये सब अद्भुत काम यीशु ने इसलिये किए थे ताकि उन्हें देखकर लोग, और विशषकर उसके चेले, जिन्हें उसने अपने सुसमाचार को संसार को देने के लिये चुना था, उस पर यह विश्वास लाएंगें कि वह सचमुच में परमेश्वर का पुत्र है। क्योंकि यीशु पृथ्वी पर एक बहुत ही बड़ा और अद्भुत काम करने को आया था। वह सारे जगत के सब लोगों के सब पापों को अपने ऊपर लेकर उन पापों का दन्ड प्राप्त करने को आया था। वह एक ऐसी मौत का दण्ड पाने के लिये आया था जो सारे जगत के पापों के बदले में थी। उसकी मृत्यु पापियों के लिये एक बलिदान था। उसकी मौत पापियों के लिये थी। उसे परमेश्वर ने जगत में मरने के लिये भेजा था। वह सारे जगत में पापों का प्रायश्चित करने को मारा गया था। उसकी मृत्यु में एक महान उद्देश्य में परमेश्वर की एक अदभुत योजना थी। अपने ही एक–लौते पुत्र को क्रुर की भयानक मृत्यु का दण्ड दिलवाकर परमेश्वर ने यह उचित समझा था की उसकी मौत से आप के और मेरे पापों का प्रायश्चित हो जाए।

परमेश्वर के वचन की पुस्तक बाइबल में लिखा है, कि "हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें। क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है: और जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है; और परमेश्वर को जानता है। ओर जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है। और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है, वह इस से प्रकट हुआ है, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है कि हम उसके द्वारा जीवन पाए। प्रेम इस में नहीं , कि हम ने परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा" (यूहन्ना

४:७–१०) । क्या आप जानते हैं, कि परमेश्वर ने आप के पापों का प्रायश्चित कर दिया है? क्या आप जानते हैं, कि आप के पापों का दाम चुकाया जा चुका है? क्या आप जानते हैं, कि आप के पापों के बदले में यीशु ने अपने आप को बलिदान कर दिया है । और क्या आप जानते हैं, कि अब आप अनन्त जीवन पाने के लिये परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग मे जा सकते हैं? क्योंकि बाइबल में लिखा है, कि सो अब यदि कोई मसीह में है जो वह एक नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई है देखो, वे सब नई हो गई । और सब बातें परमेश्वर की और से है, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल –मिलाप कर लिया अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों को दोष उन पर नहीं लगाया । क्योंकि यदि ऐसा होता तो हम सब अवश्य ही अपने पापों के कारण नरक में जाते । पर यीशु जो पाप से अज्ञात था, उसी को परमेश्वर ने हमारे स्थान पर पापी मान लिया, और हमारे पापों का दण्ड उसे दे दिया । ताकि हम उस में होकर परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाएं (२ कुरिन्थियों ५:१७:–२१) ।

क्या आप यीशु में हैं? क्या आप उसमें यह विश्वास करते हैं, कि उसने मेरे सब पापों को अपने ऊपर लेकर उनका दन्ड उठा लिया है? क्या आप यीशु को अपने सब पापों को प्रायश्चित और अपना मुक्तिदाता मानते हैं? आप यह नहीं कह सकते कि आपने कभी कोई पाप नहीं किया है । क्योंकि यदि ऐसा सम्भव होता, तो परमेश्वर को अपने पुत्र को जगत में भेजने की कोई आवश्यकता न होती । और यीशु को जगत में आकर क्रूस की भयानक और दर्दनाक मौत का सामना करने की जरुरत न होती । किन्तु परमेश्वर जानता है, कि आपको और मुझे और सारे जगत को पापों से मुक्ति पाने की आवश्यकता है । क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है । औंर पाप का दन्ड नरक है । लेकिन परमेश्वर ने हमें नरक में रहने के लिये नहीं बनाया है । उसने हमें स्वर्ग

के अनन्त जीवन के लिये बनाया है । नरक में मनुष्य स्वयं अपने पापों के कारण जाएगा । लेकिन परमेश्वर, जिसने हमें बनाया है, और जो हमारा आत्मिक और सवर्गीय पिता है, ऐसा नहीं चाहता । सो उसने एक महान बलिदान हमारी छुड़ौती के लिये दिया हैं । उसने अपने पुत्र की मृत्यु के द्वारा हम सबके पापों को प्रायश्चित किया है ।

क्या आज आप परमेश्वर की बात मानकर और अपने सब पापों से मन फिराकर अपने पुत्र को अपना उद्धारकर्ता मानने को तैयार है? वह आन की प्रतीक्षा कर रही है । क्योंकि वह आप से प्रेम करता है, ओर क्योंकि वह आप की आत्मा के विशाल महत्व का जानता है । और मेरी आशा है, कि आप आज अपना जीवन यीशु को देंगे ।

यीशु मनुष्य की एक मात्र आशा

जिन बातों को इस कार्यक्रम में में आप के सामने रखता हूँ उनका सम्बन्ध बाइबल से है । बाइबल एक ऐसी पुस्तक है जिसमें परमेश्वर ने अपनी इच्छा को मनुष्यों पर प्रकट किया है । मैं आप के सामने किसी "धर्म" का प्रचार नहीं करता हूँ और नही बाइबल किसी "धर्म" की पुस्तक है । मैं आप को परमेश्वर के वचन की बातों को बताता हूँ । और बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है । अर्थात बाइबल में परमेश्वर ने उन बातों को प्रकट किया है जिन्हें वह मनुष्य को बताना चाहता है । परमेश्वर चाहता है, कि सबसे पहले हम सब इस बात से परिचित हों कि हमें परमेश्वर ने बनाया है, अर्थात उसने हमें जीवन दिया है । और बाइबल हमें बताती है, कि आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को कैसे बनाया था, और मनुष्य आरम्भ मेंएक नवजात शिशु की तरह निष्कलंक और निष्पाप था । जब एक बालक का जन्म होता है तो वह मासूम और निदोर्ष होता है । उसमें कोई दोष नहीं होता , कोई पाप नहीं होता । सो यदि उसकी मृत्यु हो जाए, तो उसकी आत्मा का क्या होगा? वह निश्चय ही स्वर्ग में जाएगा क्योंकि वह निर्दोष है । प्रभु यीशु ने कहा था, कि बालकों को मेरे पास आने दो क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है । (मत्ती १६:१४) । और अपने चेलों से यीशु ने कहा था कि जब तक तुम अपना मन फिराकर छोटे बालकों की तरह नहीं बनोगे तुम स्वर्ग के राज्य में कदापि प्रवेश करने नहीं पाओगे । (मत्ती १८:१–३) ।

आरम्भ में परमेश्वर ने मनुष्य को एक निर्दोष बालक की तरह पवित्र बनाया था । लेकिन मनुष्य ने परमेश्वर की आज्ञा पर न चलकर अपने आप को पापी बना लिया था, ओर इस कारण वह परमेश्वर से अलग और दूर हो गया था । पाप का अर्थ है

परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन करना (यूहना ३:४) । न केवल परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है पर उसने कुछ नियम और कायदे भी मनुष्य के लिए बनाए है । जिनके अनुसार मनुष्य को चलना चाहिए । उसने मनुष्य को एक विवेक दिया है । जो इन्सान को बताता है । कि क्या सही है और क्या गलत है । अच्छाई और बुराई में अन्तर को जानने के लिये मनुष्य को किसी स्कूल या कॉलेज मे जाने कि आवश्कता नहीं होती । पर वह स्वयं इस बात को अनुभव करता है कि गलत क्या है और सही क्या है । परन्तु अपने शरीर और अपनी आँखों कि अभिलाषा के चक्कर में पड़कर मनुष्य अकसर बुराई और गलत रास्ते को ही चुनता है । अब सब इस बात को जानते हैं कि शराब पीने से और नशा करने से और सिगरट बीड़ी पीने से कोई अचछाई पैदा नहीं होती बल्कि बुराई ही पैदा होती है । पर फिर भी करोडों लोग पीते है । ऐसे ही सब लोग जानते हैं कि धूस लेना या धूस देना अच्छी बात नहीं है पर फिर भी बहुतेरे लोग ऐसा करते है । प्रत्येक वह कार्य जिसे मनुष्य जानता है कि वह गलत काम है किन्तु फिर भी उसे करता है । वह पाप है । और परमेश्वर कि नजर में,पाप, पाप है । अर्थात उसकी दृष्टि में कोई पाप छोटा और बड़ा नहीं है । प्रत्येक बुराई और गलत काम जो इन्सान करता है, चाहे वह शरीर के किसी भी अंग से हो , जैसे कि मान लें, आप अपनी जुबान से कोई गलत बात बोलते हैं , या आप अपने मन में कुछ गलत सोचने लगते है, परमेश्वर कि दृष्टि में वह पाप है । प्रभु यीशु मसीह ने सिखाया था कि तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि तुम व्यभिचार न करना पर मैं तुम से कहता हुं, यीशु ने कहा था , कि यदि कोई किसी पर कुदृष्टि डाले तो वह अपने मन सें उस से व्यभिचार कर चुका । (मत्ती ५:२७,२८) । यहाँ प्रभु यीशु के कहने का अर्थ यह है, कि प्रत्येक पाप जो मनुष्य करता है उसकी उत्पत्ती मनुष्य के मन मे होती है । और यदि मनुष्य अपने मन में भी कोई गलत विचार ले आता है , तो परमेश्वर के लेखे मे वह

पाप कहलाता है । क्यांकि मनुष्य तो बाहर कि बातों को देखता है,परन्तु परमेश्वर मनुष्य के तन को देखता है ।

सो इस से हम यह सीखते है कि परमेश्वर के लेखे में और उसकी दृष्टि में पृथ्वी पर प्रत्येक जन पापी है । कोई भी मनुष्य सफ़ेद या गेरुए कपड़े पहन कर अपने पापो को परमेश्वर से नहीं छिपा सकता । और कोई भी इन्सान भजन और प्रार्थनाएं करके अपने पापों से मुक्ति नहीं पा सकता । क्योंकि पाप कि मजदुरी तो मृत्यु है । और बाइबल कहती है कि सब ने पाप किया है,और सबके सब परमेश्वर से अपने अपने पापों के कारण दूर हैं । पाप मनुष्य की एक बड़ी ही जटिल समस्या है । मनुष्य के पास ऐसी कोई वस्तु नहीं है जिसे देकर वह वह अपने पापों का प्रायश्चित कर सकता है । उसका मन और असका शरीर सब पाप के वश में है । वह अपने प्रयत्नों से एक पाप – मुक्त और ईश्वर जैसा पवित्र जीवन व्यतीत कर ही नहीं सकता । सो वह परमेश्वर से अलग है । अपने पापों में मरा हुआ है । और नरक में जाने के अलावा उसके पास और कोई रास्ता नहीं है । किन्तु बाइबल में हमें एक खुशी का पैगाम मिलता है । बाइबल मेखुशी का पैगाम मिलता है एक सुसमाचार है । और उसी सुसमसचार को मनुष्य को देने के लिये परमेश्वर ने बाइबल की रचना की है । बाइबल हमें यह बताती है, कि हम किस प्रकार अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करके परमेश्वर के लेखे में धर्मी बन सकते है । और स्वर्ग में जाने के योग्य बन सकते है । बाइबल हमें यह बताती है, कि जबकि मनुष्य अपने पापों के कारण स्वर्ग में परमेश्वर के पास जाने के योग्य नहीं था, तो परमेश्वर स्वयं मनुष्य को बचाने के लिए और पाप से उसे मुक्ति देने के लिये , और उसे स्वर्ग में जाने के योग्य बनाने के लिए स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया । प्रभु यीशु ने बाइबल में कहा था, कि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखाकि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया

ताकि जो कोई उस पर विश्वास लाए वह नाश न हो परन्तु हमेशा का जीवन पाए ।

यीशु परमेश्वर था । वह पृथ्वी पर मनुष्यों को बचाने के लिए आया था । उसके द्वारा और उसमे होकर परमेश्वर स्वयं स्वर्ग को छोड़कर पृथ्वी पर आ गया था । और न केंवल यीशु ने अपने बारे में ऐसा कहा था । परन्तु उसका जीवन और उसके काम और उसकि शिक्षाएँ इस सच्चाई की पुष्टि करते हैं । केवल वही पृथ्वी पर एक ऐसा इन्सान था, जिसके कामों को देख कर लोग यह विश्वास करते थे वह सचमुच में परमेश्वर की ओर से आया है, और जिसकी शिक्षाओं को सुनकर लोग यह मानते थे कि कोई मनुष्य ऐसी बाते नहीं कर सकता ।

पर वास्तव में यीशु एक बलिदान देने को आया था । सो परमेश्वर की योजना से उस पर झूठे दोष लगाए गए थे, और एक सबसे प्रमुख दोष उस पर यह लगाया गया था, कि इसने अपने आप को परमेश्वर के समान बनाया है! और फिर यीशु को एक कूस पर चढ़ाकर, रोमी राज्य की प्रथा के अनुसार मृत्यु दन्ड दिया गया थाा । बाइबल में लिखा है, कि यीशु की मृत्यु पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य के पापों के प्रायश्चित के लिये थी । यही बाइबल का सुसमाचार है । यानि यीशु, परमेश्वर का एकलौता पुत्र आप के पापों का प्रायश्चित है । उसमें विश्वास लाकर आप अपने पापों से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं । उसे अपने जीवन में ग्रहण कर के आप परमेश्वर के लेखे में धर्मी बन सकते हैं । और उसके जीवन का अनुसरण करके आप परमेश्वर के स्वर्ग में जाने के योग्य बन सकते हैं । और, एक अंतिम बात उस यीशु के बारे में जो हम सब के पापों का प्रायश्चित करने को मर गया था, मैं आप को यह बताना चाहता हूं, कि क्योंकि वह वास्तव में परमेश्वर था इसलिये वह अपनी मृत्यु के बाद तीसरे, दिन फिर जी उठा था । यीशु आज स्वर्ग में है । क्योंकि जी उठनें के बाद वह स्वर्ग में फिर वापस चला गया था । वह हमारा एक जिन्दा मुक्तिदाता

है । क्या आप उस में विश्वास करते हैं ? और यदि आप उसमें विश्वास नही करते तो फिर पाप से मुक्ति पाकर स्वर्ग में जाने की आप के पास और क्या आशा है ?

जब यीशु वापस आएगा

जिस मसीह यीशु का प्रचार मैं आपके सामने करता हूं वह आज से लगभग दो हजार साल पहले इस ज़मीन पर आया था ।" यीशु" नाम का अर्थ है " उद्धारकर्ता" या "मुक्तिदाता ।" और इसी विशेष उद्धेश्य को लेकर, अर्थात मनुष्य का पाप से उद्धार करने के लिये यीशु जगत में आया था । यीशु के जन्म से पहले, परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत के द्वारा, उसकी माता से कहा था कि जिस बालक को तू जन्म देगी उसका नाम तू यीशु रखना क्योंकि वह लोगों को उनके पापों से मुक्ति दिलाएगा । (मत्ती १:१८–२५ तथा लूका १:२६–३८) । यीशु का जन्म परमेश्वर की इच्छा तथा सामर्थ से हुआ था । वह परमेश्वर का वचन था, जो परमेश्वर के साथ था । किन्तु, वह एक मनुष्य बनकर पृथ्वी पर आ गया था । उसने एक मनुष्य का सा जीवन व्यतीत किया था । उसने सब बातों का सामना किया था । लेकिन फिर भी उसने अन्य मनुष्यों की तरह कभी कोई पाप नहीं किया था । यीशु इस पृथ्वी पर लगभग तेंतिस वर्ष तक रहा था । उसके बाद परमेश्वर ने ऐसा होने दिया,कि वह अपने पवित्र जीवन तथा सच्ची शिक्षाओं के कारण कुछ लोगों की ईर्श्या का निशाना बना । उन्हों ने उस पर झूठे आरोप लगाए और वह उस समय की रोमी प्रथा के अनुसार एक कूस के ऊपर लटका कर मारा गया । परमेश्वर के वचन की पुस्तक पवित्र बाइबल में लिखा है, कि यीशु सारे जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित करने को कूस पर लटकाया गया था । यह एक खुशी का समाचार है । अनेकों लोग इस सच्चाई से आज भी परिचित नहीं हैं । और इसीलिये, रेडियों के माध्यम से और साहित्य के द्वारा हम सब लोगों तक इस सुसमाचार को पहुंचाना चाहते हैं । ताकि सब लोग इस पृथ्वी पर जान लें

कि परमेश्वर उन सब से प्रेम करता है और उस ने स्वयं सारे जगत के पापों का प्रायश्चित कर दिया है । और आज हम में से कोई भी अपने पापी जीवन को छोड़कर और अपने सब अधर्म और बुराईयों से मन फिराकर परमेश्वर के पास आ सकता है । और परमेश्वर पापियों के लिये यीशु मसीह के बलिदान के कारण प्रत्येक मनुष्य को क्षमा करेगा ।

इसी सुसमाचार को सारे जगत में प्रचार करने की आज्ञा देकर यीशु ने आरम्भ में अपने चेलों को भेजा था । और उन में से एक शिष्य का नाम थोमा था जो सन् बावन में भारत में यीशु के सुसमाचार को लेकर आया था । आज संसार–भर में करोड़ों ऐसे लोग हैं जो प्रभु यीशु मसीह में यह विश्वास करते हैं कि वह उनके पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस के ऊपर मरा था । और यह चाहते हैं कि सारा जगत यह जान ले और मान ले कि यीशु ही जगत का उद्धारकर्ता है । क्योंकि हम सब की आशा केवल प्रभु यीशु मसीह में है । यदि वह हमारे पापों का प्रायश्चित करने को, हमारे स्थान पर हमारे पापों का दन्ड अपने ऊपर लेकर क्रूस पर न मरता, तो आज हमारे पास क्या आशा होती ? पृथ्वी पर के इस नाशमान जीवन के समाप्त हो जाने पर हम किस आशा के साथ इस जगत को छोड़कर जाते ? पाप हम सब को परमेश्वर से दूर रखता है, और पाप के कारण कोई भी इन्सान परमेश्वर के स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता । पर यीशु ने हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया है । उसने हमारे पापों का उचित दंड उठा लिया है । वह हमारे पापों का छुटकारा है । वह हमारा मुक्तिदाता और हमारा उद्धारकर्ता है । वह मार्ग और सच्चाई और जीवन है । उसके द्वारा,उसमें होकर, हमे, परमेश्वर के पास जाने की आशा मिलती है । किन्तु जिसके पास यह आशा नहीं है उसके पास कुछ भी नही है । क्योंकि यदि मनुष्य अपने प्रयत्नों से सारे जगत की सारी वस्तुओं को भी प्राप्त कर ले, किन्तु अन्त में अपनी आत्मा को नरक में हमेशा के लिये खों दे, तो उसे क्या

लाभ होगा ? क्या पृथ्वी पर कोई ऐसी वस्तु है, जिसे मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करने को दिया जा सकता है ? क्या कोई ऐसी वस्तु संसार में है, जिसे मनुष्य के पापों के छुटकारे के लिये दिया जा सकता है ? क्या इस जगत में कोई शक्तिशाली वस्तु है जिसके द्वारा मनुष्य की आत्मा को नरक में जाने से बचाया जा सकता है ? बहुतेरे लोग अपने "अच्छे" और "धर्म" के कामों के ऊपर भरोसा करते हैं। वे सोचते हैं, कि यदि वे झूठ नहीं बोलते, किसी से झगडा नहीं करते, और चोरी नहीं करते, और दान पुनः के काम करते हैं, या वे किसी "ऊंची जाति" से सम्बन्ध रखते हैं, तो वे अवश्य ही अपनी मृत्यु के बाद स्वर्ग में जाएंगें। परन्तु क्या पृथ्वीं पर कोई भी एक ऐसा आदमी है, क्या कोई ऐसा जन है जिसने परमेश्वर के लेखें में कभी कोई पाप न किया हो ? पवित्र बाइबल में लिखा है, कि जगत में सबने पाप किया है और सब के सब परमेश्वर से अपने पाप के कारण अलग हैं। (रोमियों ३:२३)। "क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है," बाइबल कहती है, "परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु मे अनन्त जीवन है"(रोमियों ६:२३)। क्या आप ने उस अनन्त जीवन की आशा को प्राप्त कर लिया है ?

अपने सारे मन से उद्धारकर्ता यीशु मसीह में विश्वास लाकर, और सब बुरी बातों से अपना मन फिराकर, और यीशु की आज्ञानुसार अपने सब पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर और प्रतिदिन प्रभु यीशु मसीह के बताए मार्ग पर चलकर आप निश्चित रूप से जान सकते हैं, कि आप के पास स्वर्ग में प्रवेश करके अनन्त जीवन पाने की आशा हैं। जिस प्रकार प्रेरित पौलुस ने अपनी मृत्यु के समय कहा था, कि "मै अच्छी कुशती लड़ चुका हूं, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है।" इसलिये, "भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी, और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नही,वरन् उन सब को भी, जो उसके

प्रकट होने को प्रिय जानते हैं।" (२ तीमुथियुस ४:७,८)।

यीशु जो मनुष्यों के पापो का प्रायश्चित करने को स्वर्ग से आया था, और जो कूस के ऊपर मारा गया था, वह परमेश्वर का पुत्र था। और इसका सबसे बड़ा प्रमाण हम इस बात में देखते हैं कि अपनी मृत्यु के तीन दिन बाद वह फिर से जी उठा था। और जब वह वापस स्वर्ग पर उठाया जा रहा था तो उसके शिष्यों ने यह आकाशवाणी सुनी थी कि यही यीशु एक दिन फिर से वापस आएगा। (प्रेरितों १:११)। प्रभु यीशु ने कहा था, कि वह जगत का न्याय करने के लिये एक दिन फिर वापस आएगा। और अब की बार जब यीशु आएगा तो उसे पृथ्वी पर जन्म लेने की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि इस बार वह पृथ्वी पर रहने के लिये नहीं आएगा, पर सारे जगत के सब लोगों का न्याय करने को आएगा। जब यीशु आएगा, तो बाइबल में लिखा है, कि उस दिन सारे मरे हुए लोग जी उठेंगें– जिस प्रकार परमेश्वर ने यीशु को अपनी सामर्थ से जिलाया था–– उसी प्रकार सब लोग जी उठेंगें। और सारे लोग अपने–अपने भले–बुरे कामों का फल पाएंगे। प्रभु यीशु ने उस दिन का वर्णन करके कहा था, कि इस बात से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है जबकि सारे मृत उसका शब्द सुनकर जी उठेंगें। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थसान के लिये जी उठेंगे, पर जिन्हों ने बुराई की है वे दन्ड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगें। (यूहन्ना ५:२८,२९)। और यीशु ने कहा था, कि तब सारे अधर्मी अनन्त दन्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। (मत्ती २५:४६)। बाइबल में लिखा है कि "इसलिये परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उस ने ठहराया है और उसे मरे हुओं मे से जिलाकर यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।" (प्रेरितों १७:३०,३१)।

ज़मीन पर कुछ बात ऐसी हैं, मित्रों जिनका सामना हम सबको एक समान करना पड़ता है । जैसे कि हम सब का जन्म हुआ है । अमीर–गरीब और सभी लोग पृथ्वी पर एक ही तरह से जन्म लेते हैं । और ऐसे ही मृत्यु भी हैं । हम सबको एक न एक दिन अवश्य ही मरना है । इन बातों के सम्बन्ध में हम स्वयं चुनाव नहीं कर सकते । ये बाते निश्चित हैं । हम चाहे इन्हें पसंद करे या न करे, पर ये अवश्य हैं । और ऐसे ही सब मरे हुओ का जी उठना और और उनका न्याय होना भी निश्चित है । हम चाहे यह बात न मानना चाहें, इस बात पर हम चाहे विश्वास करे या न करें, इस से कुछ अंतर नही पड़ता । पर जैसे जीवन और मृत्यु निश्चित है, उसी तरह से पुनरूत्थान और न्याय भी निश्चित है । (इब्रानियों ९:२७) । किन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि उस ने इन सब बातों के बारे में हमें पहले से बता दिया है । और अब यह हमारा कर्तव्य है, कि हम अपने आप को इस संसार से जाने के लिये और परमेश्वर के न्याय कें दिन का सामना करने के लिये तैयार करे । और इस तैयारी के लिये हमारी एक ही आशा है, अर्थात यीशु मसीह,जो हमारे पापों का प्रायश्चित और हमारे उद्धार का कर्त्ता है । उसमे होकर हम परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाते है । वह हमारे लिये पाप से बचने का एक स्थान है । उसमे होकर हम एक नई सृष्टी बन जाते हैं । क्या आप ने अपने जीवन को प्रभु यीशु मसीह को दे दिया है ? क्या आपने उसे अपने ऊपर धारण कर लिया है ? जब वह न्याय करने को आएगा तो क्या आप उसके साथ जाने के लिये तैयार होंगें ? यह परमेश्वर की इच्छा है । वह आपको स्वर्ग में हमेशा की ज़िन्दगी देना चाहता है । पर चुनाव आपका है । और मेरी आशा है, कि इन सब बातों के ऊपर आप सारी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे और अपने जीवन में यीशु मसीह को चुनेंगें, ताकि जब वह तो वह आपको अपने साथ स्वर्ग मे रहने के लिए चु ने ।

यीशु की कलीसिया

आज मैं आप को प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया के बारे में कुछ आवश्यक बातें बताना चाहता हूं। क्या आप ने मसीह की कलीसिया के बारे में कभी सुना है ? हां, आप ने "गिरजाघर" या "गिरजा" के बारें में तो जरूर सुना होगा। पर वास्तविकता, यह है, कि बाइबल में हमें गिरजे" या "गिरजा" के बारे में कुछ नहीं मिलता। वास्तव में, जिसे लोग गिरजा कहते हैं,बाइबल में उसे कलीसिया के नाम से सम्बोधित किया गया है। कलीसिया शब्द यूनानी भाषा का शब्द है। प्रभु यीशु का नया नियम सर्व प्रथम यूनानी भाषा में लिखा गया था। जिसमें हम यह पढ़ते हैं, कि प्रभु यीशु मसीह ने अपने चेलों से कहा था, कि "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा।" (मत्ती १६:१८)। और अपनी कलीसिया को मसीह ने परमेश्वर का राज्य या स्वर्ग का राज्य कहकर भी सम्बोधित किया था। (मत्ती १६:१६)। कलीसिया का अर्थ है एक जमायत, या लोगों की एक मंडली। अर्थात कलीसिया उन लोगों की मन्डली है, जिनके ऊपर परमेश्वर राज्य करता है, यानि वह परमेश्वर के लोगों की मन्डली है। इसीलिये कलीसिया को परमेश्वर का राज्य और स्वर्ग का राज्य कहा गया है। क्योंकि परमेश्वर स्वर्ग में है, और जो लोग कलीसिया में हैं वे परमेश्वर की उस इच्छा के अनुसार चलने का प्रयत्न कर रहे हैं जिसे उसने अपनी पुस्तक बाइबल के द्वारा प्रकट किया है।

हिन्दी और उर्दु में जिसे हम कलीसिया के नाम से जानते हैं, अंग्रेजी की बाइबल में उसी को "चर्च" कहकर सम्बोधित किया गया है। लेकिन कलीसिया या चर्च क्या है ? लोगों के लिये चर्च या कलीसिया एक मंदिर की तरह है, जिसे वे गिरजा कहकर पुकारते हैं। अधिकांश रूप से यह समझा जाता है, कि चर्च एक

पूजा या प्रार्थना का स्थान है– और कभी –कभी लोग उसे परमेश्वर का घर कहकर भी सम्बोधित करते हैं । परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है । क्योंकि परमेश्वर तो आत्मा है, उसे रहने के लिये किसी ऐसे घर की आवश्यकता नहीं है जिसे इन्सानों ने अपने हाथों से बनाया है ।

सो, सबसे पहले तो हमें यह समझना चाहिए कि मसीह ने कहा था, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा । उसने गिरजा बनाने को नहीं कहा था । पर उसने कलीसिया बनाने को कहा था । और फिर मसीह ने कलीसियाएं बनाने को नहीं कहा था । और कलीसिया कोई घर या इमारत नहीं है,पर कलीसिया मसीह के लोगों की एक मन्ड़ली है । यह ठीक है, कि उस मन्डली या मसीह की कलीसिया को आराघना करने के लिये एक जगह की आवश्यकता होती है । पर जगह या वह स्थान जहां मसीह की कलीसिया आराघना करने के लिये एकत्रित होती है, कलीसिया नहीं है । पर कलीसिया अर्थात चर्च मसीह के लोग हैं, जो उसकी मन्डली हैं । पर मसीह ने कलीसिया को क्यों बनाया है ।

मसीह ने कलीसिया को इसलिये बनाया है ताकि वह उसमे उन लोगों को मिलाए जो उसमें विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर अपने पापों से उद्धार पाते हैं । बाइबल में लिखा है, कि जब लोग आरम्भ में यीशु मसीह के इस सुसमाचार को सुनते थे कि वह जगत के पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर लटकाया गया था, और जब वे यीशु मसीह में विश्वास ले आते थे कि वह उनके पापों के लिये मारा गया था तो उन्हें यह सिखाया जाता था कि वे सब अपने–अपने पापों से अपना मन फिराएं और अपने–अपने पापों की क्षमा पाने के लिये बपतिस्मा लें । और जब वे पाप से मन फिराकर बपतिस्मा लेते थे तो मसीह उन सब को अपनी कलीसिया मे अथार्त अपने लोगों की मन्डली में मिला लेता था । और बाइबल कहती है कि प्रभु यीशु मसीह आज भी जो लोग उसके सुसमाचार को सुनकर उसमे अपने सारे मन से

विश्वास लाते हैं और अपने पापों से मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेते हैं, उन्हें मसीह आज भी अपने लोगों की मंडली में मिला लेता है । उसके लोगों की मंडली अर्थात उसकी कलीसिया उन लोगों की मंडली हैं जिन्हों ने उसके द्वारा उद्धार अर्थात अपने पापों से मुक्ति पाई है ।

चर्च अर्थात मसीह की कलीसिया को बाइबल में मसीह की देह भी कहा गया है । यानि कलीसिया मसीह की आत्मिक देह है । जिस प्रकार देह मे विभिन्न प्रकार के बहुत से अंग होते हैं, ऐसे ही मसीह की कलीसिया भी है । (इफीसियों १:२२,२३; । कुरिन्थसयों १२:२७) । कोई भी व्यक्ति मसीह में विश्वास लाकर और उसकी आज्ञा को मानकर उसकी कलीसिया में शामिल हो सकता है । मसीह की कलीसिया में, अर्थात् उसके उद्धार पाए हुए लोगों की मन्डली में कोई भेद–भाव नहीं होता । उसमे कोई छोटा और बड़ा नहीं होता । मसीह की कलीसिया में सब लोग एक समान हैं क्योंकि परमेश्वर सबसे एक समान प्रेम करता है । वह सबका उद्धार करना चाहता है । उसने अपने एकलौते पुत्र मसीह को सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को बलिदान किया था । बाइबल में लिखा है, कि "तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो । और तुम मे से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है । सो अब न कोई यहूदी रहा न यूनानी, न कोई दास, न स्वतंत्र न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो ।" (गलतियों ३:२६–२८) । अब इसका अर्थ यह नहीं है कि मसीह मे बपतिस्मा लेकर हम नर या नारी या दास या स्वतंत्र नहीं रहते । पर इसे अभिप्राय यह है कि मसीह में हम सब एक हो जाते हैं । अर्थात उसमें कोई जाति–पाति नहीं होती, कोई ऊंच– नीच नहीं होती, और कोई भेद भाव नहीं होता । जैसे कि हमारे शरीर के अंग हैं । अब हाथ पावं नहीं है और पांव हाथ नहीं है । पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें देह मे उनकी

आवश्यकता नहीं है । हमारी देह में कुछ अंग छोटे हैं, और कुछ बड़े हैं । पर वे सब के सब जरूरी हैं । और ऐसे ही मसीह की कलीसिया भी है । बाइबल में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

क्योकि जिस प्रकार देह तो एक है, और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह है, उसी प्रकार मसीह भी है । क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया । इसलिये कि देह में एक ही अंग नहीं,परन्तु बहुत से हैं । यदि पांव कहे, कि मैं हाथ नहीं, इसलिये देह का नहीं, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं? और यदि कान कहे, कि मैं आंख नहीं, इसलिये देह का नही, तो क्या वह इस कारण देह का नहीं ? पर यदि सारी देह आंख ही होती तो सुनना कहां होता ? और यसदि सारी देह कान ही होती है, तो सूंघना कहां होता ? परन्तु सचमुच परमेश्वर ने सब अंगों को अपनी इंच्छा के अनुसार एक–एक करके देह में रखा है । क्योंकि यदि वे सब एक ही अंग होते, तो फिर देह कहां होती परन्तु अब अंग तो बहुत से है पर देह एक ही है । आंख हाथ से नहीं कह सकती, कि मुझे तेरा प्रयोजन नहीं । और न सिर पांवों से कह सकता है, कि मुझे तुम्हारा प्रयोजन नहीं । परन्तु देह के वे अंग जो औरों से निर्बल देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक है । और देह के जिन अंगों को हम आदर के योग्य नहीं समझते हैं उन्हीं को हम अधिक आदर देते हैं, और हमारे शोभहीन अंग और बहुत शोभामान हो जाते हैं । फिर भी हमारे शोभामान अंगों को इस का प्रयोजन नहीं, परन्तु परमेश्वर ने देह को ऐसा बना दिया है, कि जिस अंग को घटी थी उसी का और भी बहुत आदर हो । ताकि देह में फूट न पडे । परन्तु अंग एक–दूसरे की बराबर चिन्ता करें । इसलिये यदि एक अंग दुख पाता है, तो सब अंग उसके साथ दुख पाते हैं, और यदि एक अंग की बड़ाई होती है

तो उसके साथ सब अंग आन्नद मनाते हैं । इसी प्रकार तुम सब भी मिलकर मसीह की देह हो और अलग–अलग उसके अंग हो । (१ कुरिन्थियों १२:१२–२७) ।

सो, बाइबल के इस पाठ से आज हम यह सीखते हैं, कि मसीह की कलीसिया उसके लोगों की एक आत्मिक देह है । जो लोग मसीह में विश्वास लाकर उसकी आज्ञा को मानते हैं, प्रभु यीशु मसीह उनका पाप से उद्धार करता है और उन्हें वह अपनी कलीसिया अर्थात चर्च में मिला लेता है । वे लोग संसार में तो रहते हैं, पर वे संसार के नहीं हैं । क्योंकि उन्हें प्रभु ने चुन लिया है, और वे परमेश्वर की इच्छा पर चलकर अपना जीवन व्यतीत करते है और उनके पास यह आशा है, कि वे प्रभु यीशु मसीह की पापियों के लिये मृत्यु –के कारण उद्धार पाएगें, और परमेश्वर के स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करके हमेशा का जीवन पाएंगें । और यदि आप चाहे, तो आप भी प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया में शामिल हो सकते हैं । क्या आप ऐसा चाहते हैं ? यदि हां, तो प्रभु यीशु मसीह पर अपने सारे मन से विश्वास लाएं और उसकी आज्ञा का पालन करें ।

जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु, कहता हैं

मित्रों, मैं आपके सामने परमेश्वर के वचन को पेश करता हूं क्योंकि मेरा विश्वास है, कि परमेश्वर ने अपने वचन को,अर्थात अपनी इच्छा को, अपनी बातों को मनुष्यों के लिये प्रकट किया है । यीशु, जो आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व स्वर्ग से पृथ्वी पर मनुष्यों के पापों का प्राश्चित करने को आया था, वास्तव में आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था । वही वचन, जो परमेश्वर था, एक मनुष्य की देह में होकर पृथ्वी पर आ गया था । यानि मनुष्य को पाप से मुक्त कराने के लिये स्वयं परमेश्वर मनुष्य बनकर ज़मीन पर आ गया था । और यही कारण है कि यीशु को बाइबल में परमेश्वर का एकलौता पुत्र कहकर सम्बोधित किया गया है । और बाइबल को परमेश्वर के वचन की पुस्तक कहा गया है, क्योंकि बाइबल में उन सब बातों को हम पढ़ते हैं जिन्हें यीशु ने सिखाया था । इसलिए बाइबल परमेश्वर के वचन की पुस्तक है । बाइबल में लिखी बातें प्रत्येक मनुष्य के लिए परमेश्वर के आदेश हैं । और परमेश्वर के वचन की पुस्तक है । बाइबल में लिखी बातें प्रत्येक मनुष्य के लिये परमेश्वर के आदेश हैं । और परमेश्वर के वचन की बातों को हमारे लिये न केवल सुनना ही आवश्यक है पर उन बातों को मानना और उन पर चलना भी उतना ही आवश्यक है । क्योंकि प्रभु यीशु ने एक बार कहा था कि, "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है ।" (मत्ती ७:२१) ।

यीशु स्वर्ग से पृथ्वी पर इसी उद्देश्य से आया था कि वह

मनुष्यों को स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करने के योग्य बना दे । उसके विषय में बाइबल मे लिखा है कि, वह धनी होकर भी तुम्हारें लिये कंगाल बन गया ताकि उसके कंगाल हो जाने से तुम धनी हो जाओ । (२ कुरिन्थियों ८:९) । और, पाप से अज्ञात होते हुए भी वह हमारे लिये पाप ठहराया गया ताकि हम उस में होकर परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाएं । (२ कुरिन्थयों ५:२१) । वह हमारा उद्धार कर्त्ता और हमारा प्रभु है । किन्तु, केवल यही स्वीकार कर लेने से और उसे प्रभु–प्रभु कहने से हम स्वर्ग में जाने के योग्य नहीं बनेंगे । क्योकिं यीशु ने कहा था, कि जो मुझ से प्रभु–प्रभु कहता है उनमे से हर एक स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगे । परन्तु वह जो स्वर्ग में मेरे पिता की इच्छा पर चलता है केवल वही उसके स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करेगा । क्या आप स्वर्ग में जाना चाहते हैं क्या आप परमेश्वर के बताए हुए मार्ग पर चलते हैं? क्या आप उसकी बातों पर अमल करते हैं? जैसा जीवन वह आपको व्यतीत करने को कहता है । क्या आप वैसा जीवन व्यतीत करते हैं? जैसा स्वभाव वह आप को रखने को कहता है, क्या आप वैसा ही स्वभाव रखते हैं ? पाप से उद्धार पाने के लिये, मुक्ति पाने के लिये, जिन आज्ञाओं को मानने को उस ने कहा है, क्या हम ने उन्हें माना है ? बहुतेरे लोग अपने घरों में यीशु की तस्वीर टांगना चाहते हैं । जबकि यीशु का एक भी असली चित्र दुनिया में कहीं, पर भी नहीं है । फिर भी लोगों ने उसकी तस्वीरें बना ली हैं, और उन्हें अपने घरों की दीवारो पर सजाना चाहते हैं । पर क्या वे लोग उसकी आज्ञाओं को मानते हैं जिन्हें उसने दिया है ? क्या वे ऐसे जीवन व्यतीत करते हैं जैसे वह चाहता है ? घरों में तस्वीरें लगा लेने से, कोई स्वर्ग मे प्रवेश नहीं करेगा । पर जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है, यीशु ने कहा था, केवल वही उसके स्वर्ग में प्रवेश करेगा । बाइबल पढना, भजन गाना, और प्रार्थना करना, ये बडी ही अच्छी बातें हैं । पर ऐसा समझ लेना कि ऐसा करने से हम स्वर्ग में चले जाऐंगें एक बहुत बड़ी

भूल होगी ।

उस दिन, यानि न्याय के दिन, यीशु ने कहा था, बहुतेरे मुझ से कहेंगें, कि हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणियां नहीं की थी, और तेरे नाम से बहुत से काम नही किए थे ? पर तब मैं, यीशु ने कहा था, उन से साफ़ शब्दों मे कह दूंगा कि मैं तुम को नहीं जानता और मेरे समने से दूर हो जाओं । इसलिये, प्रभु ने कहा था, कि मेरी बातों को सुनकर जो उन्हें मानता है वह एक ऐसे बुद्धिमान मनुष्य की तरह है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया था । और जब आँधियां चली थीं और भंयकर तूफ़ान आया था और उस घर पर टक्करें लगी थीं, तो उसे कोई नुक्सान नहीं हुआ था, क्योंकि उसकी नेंव चट्टान पर डाली गई थी । (मत्ती ७:२२–२४) । आज बहुतेरे लोगों ने अपने घर रेत पर बना रखे है, उनकी आशा खोखली है । वे स्वर्ग में जाने की आशा तो रखते हैं, पर वास्तव में वे वहां नहीं जाएंगें । एक जगह प्रभु यीशु ने अपने चेलों से कहा था, कि तंग द्वार से प्रवेश करने का यत्न करो, क्योंकि बहुतेरे प्रवेश करना तो चाहेंगे, पर हकीकत में नहीं कर सकेंगें । (लूका १३:२४) । क्यों ? क्योंकि वे सब केवल हे प्रभु, हे प्रभु कहने वाले हैं । वे केवल घरों मे तस्वीरे लगाकर और गलों मे कूस लटाकर और वर्ष में एक–दो त्योहार मनाकर और गा–बजाकर स्वर्ग में प्रवेश करना चाहते हैं । पर जिस प्रकार के जीवनों की आशा वह उन से रखता है, और जिन आज्ञाओं को मानने के लिये उसने उनसे कहा है उन पर कोई ध्यान नहीं देते ।

प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने ऐसे चमके कि लोग तुम्हारे भले कामों को देख कर तुम्हारे पिता की जो स्वर्ग में है बड़ाई करें । (मत्ती ५:१६) । क्या हमारे काम और हमारे चाल–चलन और हमारी बोल–चाल और हमारे जीवन परमेश्वर की बड़ाई के योग्य हैं ? यीशु ने सिखाया था, कि अपने बैरियों से प्रेम रखना और अपने सताने वालों के लिये

प्रार्थना किया करो । (मत्ती ५:४४) । क्या हम ऐसा करते हैं । प्रभु ने सिखाया था, कि सबसे पहले तुम परमेश्वर के धर्म और उसके राज्य की खोज करना । (मत्ती ६:३३) क्या हम ने ऐसा किया है ? और उस प्रभु ने हमें आज्ञा देकर कहा था, कि जो कुछ तुम चाहते हो, कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो । (मत्ती ७:१२) । क्या हम इस शिक्षा पर अमल करते हैं ? प्रभु यीशु ने सिखाया था, कि तुम परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखना और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रखना । (मत्ती २२: ३७–३९) । क्या हम प्रभु की इस आज्ञा का पालन करते हैं ? बहुतेरे लोग प्रभु मे विश्वास तो करते हैं परन्तु वे उसकी आज्ञाओं को नहीं मानते हैं । बाइबल में एक जगह लिखा है कि "तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है : तू अच्छा करता है" किन्तु," दुष्टात्मा भी विश्वास रखते और थरथराते है" (याकूब २:१९) । अर्थात परमेश्वर मे विश्वास तो सभी करते है, और यहां तक कि शैतान अर्थात दुष्टात्मा भी मानते हैं कि परमेश्वर है । सो यदि केवल विश्वास ही करने से,मनुष्य अपने पापों से मुक्ति पाकर स्वर्ग मे जा सकता है, तो फिर शैतान अर्थात दुष्टात्मा भी स्वर्ग मे जा सकते हैं । लेकिन बाइबल में "केवल विश्वास" को एक मरी हुई देह के समान बताया गया है । (याकूब २:२६) अर्थात, जिस प्रकार देह में से जब आत्मा निकल जाती है तो देह निष्काम हो जाती है , मर जाती है । वैसे ही विश्वास भी उन आज्ञाओं को न माने और उन कामों को न करे जिन्हें करने की आज्ञा परमेश्वर ने दी है – तो ऐसा विश्वास एक मरा हुआ विश्वास है । वह केवल प्रभु–प्रभु कहता है, परन्तु वह नही करता जो प्रभु कहता है । अच्छी–अच्छी धुने बनाकर प्रभु की प्रशंसा में भजन और गीत गा लेने से, और सुबह–शाम प्रभु से प्रार्थना कर लेने से किसी का भी उद्धार नहीं होगा । क्योंकि प्रभु ने एक स्थान पर कहा था, कि "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे

प्रभु कहते हो ?" (लूका ६:४६) ।

इस कार्यक्रम में मैं आप को बार–बार इसलिये याद दिलाता हूं कि आप उन आज्ञाओ को मानें जिन्हें प्रभु ने हमारे लिये दिया है, और उन बातों पर चलें जिनकी शिक्षा हमें प्रभु से मिलती है, और वैसा जीवन व्यतीत करें जैसा प्रभु यीशु मसीह के जीवन से हम सीखते हैं । क्योंकि इन्सानों को बनाए रीति–रिवाजों और पर्ब्बो त्योहारों को मानकर कोई भी मनुष्य परमेश्वर के स्वर्ग में कदापि प्रवेश नहीं करेगा । परमेश्वर ने अपनी मर्जी और अपनी इच्छा को मेरे लिये और आपके लिये अपनी पुस्तक बाइबल में प्रकट किया है । और उसने स्वर्ग से अपने पुत्र यीशु मसीह को पृथ्वी पर भेजकर अपने वचन को हम सब पर प्रदर्शित किया है । वह हमारे पापों का प्रायश्चित करने को कूस के ऊपर लटकाया गया था । उसने हमारे पापों को धोने के लिये कूस पर से अपना लोहू बहाया था । उसकी मरी हुई देह को एक कब्र के भीतर गाडा गया था । और जब वह तीसरे दिन जी उठकर उस कब्र में से बाहर आ गया था, तो उसने अपने चेलो को आज्ञा देकर कहा था कि मेरे सुसमाचार को संसार में सब लोगों को जाकर बताओं । और वही सुसमाचार मै आज आप को भी बता रहा हूं, अर्थात यह, कि परमेश्वर की इच्छा से उसका पुत्र यीशु मसीह आपके पापों का प्रायश्चित करने को कूस के ऊपर मारा गया था और जब वह मरे हुओं मे से जी उठा था तो उसने अपने चेलों से कहा था, कि इस सुसमाचार को जाकर सबको सुनाओ, और लोगों से कहो कि वे पाप से अपना मन फिराएं और अपने–अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लें, अर्थात पाप के लिये मर जाएं, और पानी में पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से गाड़े जाएं, और फिर उन बातों पर चलकर अपना जीवन व्यतीत करें जिन्हें यीशु ने अपने चेलों को सिखाया था और जिन शिक्षाओं को उन्होने बाइबल में हमारे लिये लिख दिया था । (मत्ती २८:१८–२०; मरकुस १६:१५–१६; लूका २४:४६–४९; प्रेरितों २) ।

क्या आप परमेश्वर पर विश्वास करते हैं ? क्या आप उसके वचन अर्थात् उसके पुत्र यीशु मसीह पर यह विश्वास करते हैं कि वह आपके पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर मारा गया था ? क्या आप उसकी आज्ञाओं को मानकर उसकी इच्छा पर चलने को तैयार हैं ? मेरी आशा है, कि आप इन सब बातों पर सारी गम्भीरता के साथ विचार करेंगे, और केवल प्रभु का नाम लेने वाले ही नही परन्तु उसकी आज्ञाओं पर चलने वाले भी बनेंगें ।

क्या हम सब स्वर्ग में जाएंगें?

सत्य सुसमाचार एक अध्यात्मिक कार्यक्रम है । इस कार्यकम में हम उन बातों पर विचार करते हैं जिनका सम्बन्ध अनन्त मृत्यु और अनन्त जीवन से है । जिस प्रकार से शारीरिक जीवन और शारीरिक मृत्यु है, उसी प्रकार से आत्मिक जीवन और आत्मिक मृत्यु भी है । बाइबल में आत्मिक या अनन्त जीवन उस जीवन को कहा गया है जिसका सम्बन्ध स्वर्ग से है, और आत्मिक या अनन्त मृत्यु उस मृत्यु को कहा गया है जिसका सम्बन्ध नरक से है । स्वर्ग एक आत्मिक स्थान है, और इसी तरह से नरक भी एक आत्मिक स्थान है । और जो वस्तुएं आत्मिक होती है वे अनन्त होती हैं । अर्थात उन चीजों का कभी अन्त नहीं होता है । जैसे कि परमेश्वर है । परमेश्वर आत्मा है और इसलिये वह अनन्त है । अर्थात परमेश्वर का कभी अन्त नहीं होगा । और ऐसे ही हमारी आत्माएं भी और स्वर्ग और नरक भी सदा वर्तमान रहेंगे । बाइबल हमें बताती है कि मनुष्य का स्वभाव दोहरा है । अर्थात, मनुष्य शारीरिक भी है और आत्मिक भी है । शारीरिक रुप से मनुष्य इस नाशमान जगत मे वर्तमान है । और ऐसे ही आत्मिक रूप से भी हर एक इन्सान उन दो आत्मिक स्थानों मे से किसी एक में हमेशा वर्तमान रहेगा जिन्हे स्वर्ग और नरक कहा जाता है ।

स्वर्ग और नरक में जो अन्तर है वह आकाश और पृथ्वी में के अन्तर से भी बहुत बड़ा है । जबकि ये दोनों ही स्थान आत्मिक हैं और अनन्त हैं, पर दोनों एक दूसरे से बिल्कुल भिन्न है । स्वर्ग परमेश्वर का निवास स्थान पर नरक उन सब लोगों का निवास–स्थान होगा जो परमेश्वर के पवित्र स्वभाव के विरुद्ध

हैं । प्रत्येक पापी और अधर्मी नरक में हमेशा का दन्ड पाएगा । पवित्र बाइबल में लिखा है, कि नरक एक बहुत बड़ा अंधकार है । जबकि स्वर्ग ज्योति तथा प्रकाश का स्थान है । नरक, बाइबल कहती है, अनन्त पीड़ा का एक स्थान है । जबकि स्वर्ग में कोई पीड़ा न होगी, किसी प्रकार का कोई दुख–दर्द न होगा, और वहां मृत्यु भी नही होगी । इन बातों को ध्यान में रखकर इस में कोई संदेह नही कि हर एक इन्सान यह चाहता है, कि वह स्वर्ग मे जाए । पर क्या मनुष्य नरक में जाने से बचने के बारे में भी कभी सोचता है ?

क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया है, कि हमारी इस पृथ्वी पर इतने ढेर सारे धर्म कैसे आ गए ? जबकि एक ही परमेश्वर है, तो फिर उसने हम सबको स्वर्ग मे जाने का एक ही रास्ता क्यों नही बताया है ? क्या परमेश्वर लोगों मे फूट डालता है ? क्या उसने जगत में भिन्न–भिन्न धर्मो की, और अलग–अलग धर्मिक शिक्षाओं की स्थापना की है ? क्या परमेश्वर अशांति और गड़बड़ी का परमेश्वर है ? जी नहीं । बिल्कुल नहीं । परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया है । और उसने मनुष्य को एक किताब दी है, जिसे हम बाइबल कहते हैं । बाइबल में परमेश्वर ने मनुष्य के बारे में और अपने बारे मे प्रत्येक बात बताई है । बाइबल को पढ़कर हम जानते हैं कि मनुष्य इस पृथ्वी पर कहां से आया है, और मनुष्य क्या है, और उसका भविष्य क्या है । परमेश्वर ने मनुष्य को भिन्न–भिन्न शिक्षाएं नही दी है । उसने लोगों को अलग–अलग बाते नहीं बताई है । उसका केवल एक ही मार्ग है । वह गड़बड़ी और अशांति का परमेश्वर नहीं है, परन्तु वह एकता और शांति का परमेश्वर है । और अगर आज हम सब उसके बताए उस एक मार्ग पर चलने लग जाएं तो न केवल इस पृथ्वी पर से सारी गड़बडी और अशांति और नफ़रत दूर हो जाएंगी, पर हम सबको उसके स्वर्ग मे प्रवेश करने की आशा भी मिल जाएगी ।

आज बहुतेरे लोग सोचते तो हैं, कि वे अपनी मृत्यु के बाद स्वर्ग में जाएंगे । और जब उन के परिवार में किसी की मृत्यु हो जाती हैं तो वे उसे "स्वर्ग वासी" कहकर सम्बोधित भी करते हैं । पर क्या वे निश्चित रुप से जानते हैं कि वे स्वर्ग मे जाएंगें? इस बात का उन के पास क्या निश्चय और क्या प्रमाण है ? बाइबल में लिखा है कि हर एक इन्सान ने पाप किया है और इसलिये हर एक इन्सान परमेश्वर से दूर है और उससे अलग है । और हम में से कौन सा ऐसा इन्सान है, जो यह कह सकता है कि मैं ने कभी कोई पाप नही किया है ? यानि, परमेश्वर ने कहा है कि हर एक मनुष्य पापी है, और हम सब भी यह मानते हैं कि हम सब ने पाप किया है । और आज तक इस पृथ्वी पर कोई ऐसा व्यक्ति हुआ नही है जिस ने परमेश्वर के लेखों मे कभी कोई पाप न किया हो ? अब प्रश्न यह उठता है कि क्या कोई पापी स्वर्ग मे जा सकता है ? या कितने पाप करने पर कोई पापी कहलाता है? क्या मनुष्य का एक भी पाप उसे स्वर्ग में जाने से नहीं रोक सकता ? सो यदि सब के सब पापी हैं, तो फिर स्वर्ग में कौन जाएगा ?

अनेक लोग ऐसा भी सोचते हैं, कि परमेश्वर तो प्रेम है, और इसलिये वह किसी को भी नरक में नही जाने देगा पर सब को अपने पास स्वर्ग में बुला लेगा । अब इस में कोई दो राय नहीं है कि परमेश्वर प्रेम है । पवित्र बाइबल में लिखा है, कि "जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है । और जो प्रेम परमेश्वर हम से रखता है वह इस से प्रकट हुआ है, कि परमेश्वर ने अपने एकलौते पुत्र को जगत में भेजा है, कि हम उस के द्वारा जीवन पांए । प्रेम इस में नही, कि हम न परमेश्वर से प्रेम किया, पर इस में है, कि उस ने हम से प्रेम, किया, और हमारे पापों के प्रायश्चित के लिये अपने पुत्र को भेजा । "(१ यूहन्ना ४:८–१०) । हां, परमेश्वर प्रेम है । पर वह मनुष्य से प्रेम करता है । वह पाप से प्रेम नहीं करता । वह पाप

से घृणा करता है, क्योंकि पाप उसके स्वभाव के विरूद्ध है । और मनुष्य के प्रति परमेश्वर के महान प्रेम का प्रमाणा इस बात से प्रकट होता है कि उसने मनुष्य के पापों का प्रायश्चित करने के लिये स्वय अपने पुत्र को इस पृथ्वी पर भेज दिया और वह जिस मे कोई पाप नहीं था, उसे परमेश्वर ने सारे जगत के पापों के लिये बलिदान कर दिया ताकि उस की मृत्यु के द्वारा आप के और मेरे और सारे जगत के सब पापों का प्रायश्चित हो जाए । बाइबल कहती है, " क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा । किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ बात है, परन्तु क्या जाने किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी हिसाब करे । परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रकट करता है, कि जब हम पापी ही थें तभी मसीह हमारे लिये मरा ।" (रोमियों ५:६–८) । इसलिये, बाइबल मे लिखा है, "सो यदि कोई मसीह मे है तो वह एक नई सृष्टि है : पुरानी बातें बीत गई है, देखों, वे सब नई हो गई । और सब बातें परमेश्वर की ओर से है, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया अर्थात परमेश्वर ने मसीह मे होकर अपने साथ संसार का मेल–मिलाप कर लिया, और उन के अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया" क्योंकि, "जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लियें पाप ठहराया ताकि हम उस में होकर परमेश्वर के निकट धर्मी बन जाएं । " (२ कुरिन्थियों ५:१७–२१) ।

सो यीशु को परमेश्वर ने हमारे लिये एक मार्ग बनाकर भेजा था जिसके द्वारा और जिस में होकर हम अपने पापों से मुक्त हो जाते हैं, और परमेश्वर के पास उसके स्वर्ग में जाने के योग्य बन जाते हैं । प्रभु यीशु ने जगत के पापों का प्रायश्चित करने को कूस पर मरने से पहले कहा था, कि मार्ग और सच्चाई और जीवन में ही है, और बिना मेरे द्वारा कोई परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता । (यूहन्ना १४:६) । सो प्रभु यीशु मसीह जिसका

सुसमाचार इस समय मैं आप को सुना रहा हूं, स्वर्ग मे जाने की हमारी एकमात्र आशा है । वह हम सब के लिये परमेश्वर का ठहराया हुआ मार्ग है । उसके प्रायश्चित को परमेश्वर ने हमारे लिये स्वीकार किया है । उसने हमारे दंड को स्वंय अपने ही ऊपर ले लिया था । उसमे होकर हम एक नई सृष्टि, अर्थात एक पापी से पवित्र और एक अधर्मी से धर्मी बन जाते हैं । जब हम उसमे विश्वास लाते हैं कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित करने को क्रूस पर मारा गया था, तो यीशु ने कहां है, कि हमे अपने सब पापों से अर्थात बुरे चाल चलने से और बुरे कामों से अपना मन फिराना चाहिए । (लूका १३:५) । और फिर उसकी आज्ञा को मानकर अपने सब पापों की क्षमा के लिये जल के भीतर बपतिस्मा लेना चाहिए । जब हम प्रभु यीशु की आज्ञा मानते हैं, तो वह हमारे सब पापों को क्षमा कर देता है । क्योंकि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है । वह हमारे पापों के लिये मरा था । वह हमारे पापों का दन्ड स्वयं अपने ऊपर ले चुका है । वह हमारा मुक्तिदाता और हमारा उद्धारकर्त्ता है । उसमें होकर, उसमे जीवन व्यतीत करने के द्वारा हम अपने में यह आशा रखते हैं, कि जब हम इस नाशमान शरीर से अलग होकर इस जगत से जाएंगे तो हम अपने परमेश्वर के स्वर्ग मे प्रवेश करेगें । यदि आपके पास यह आशा नही है, तो मैं आप से आग्रह करके कहना चाहूंगा, कि आप प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास लाएं और उसकी आज्ञाओं पर चलकर अपना जीवन व्यतीत करे ।

क्या आप इन सब बातों के बारे में और अधिक जानकारी चाहते हैं ? आप मुझे इस पते पर लिख सकते हैं:

सनी डेविड
सत्य सुसमाचार
बॉक्स 3815
नई दिल्ली–110049